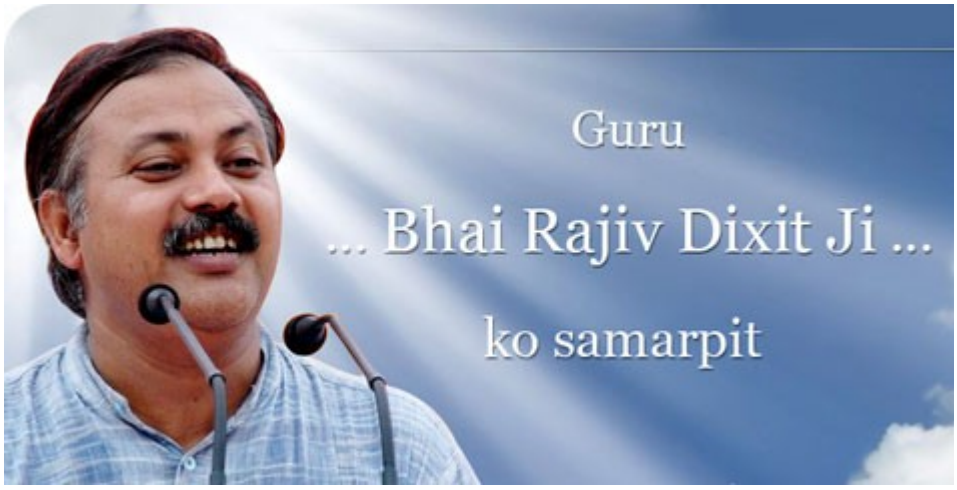


# स्व. राजीव दीक्षित जी

# के

# आग उगलते लेख

# Table of Contents

आभार .....3
स्वदेशी के प्रखर वक्ता, माँ भारती के पुत्र स्वर्गीय भाई राजीव दीक्षित .....3
जानवरों को क़त्ल कर, मांस बढाने के अनाज खिलाते है, इसी भोजन की कमी से लाखों लोग भूख से मरते हैं .....4
भारत में विदेशी कंपनियों द्वारा की जा रही लूट : राजीव दीक्षित .....5
क्या विदेशी कंपनियों के आने से पूंजी आती है : राजीव दीक्षित .....6
क्या विदेशी कंपनियों के आने से भारत का निर्यात बढ़ता है : राजीव दीक्षित .....8
क्या विदेशी कंपनियों के आने से लोगों को आजीविका मिलती है, गरीबी कम होती है? : राजीव दीक्षित .....10
मेरी शिक्षा मातृभाषा में हुई, इसलिए ऊँचा वैज्ञानिक बन सका - अब्दुल कलाम .....11
फुटपाथ पर जीने वाले लोगों की संख्या, विदेशी कंपनियों के कारण बढ़ रही है .....13
अंग्रेजो ने भारत से कितना धन लूटा एवं यह कैसे प्रारंभ हुआ ? : भाई राजीव दीक्षित .....15
भारत का सांस्कृतिक पतन .....16
भारतीय भाषाओँ के विरुद्ध षड़यंत्र.....16
विद्यालयों से लेकर न्यायालयों तक अंग्रेजी भाषा की गुलामी : भारत का सांस्कृतिक पतन .....18
अंग्रेजी कोई बड़ी भाषा नहीं है, केवल १४ देशों में चलती है जो गुलाम रहे हैं : भारत का सांस्कृतिक पतन .....19
दोपहर की शादी में थ्री पीस सूट पहनना स्वीकार, भले ही चर्म रोग क्योँ न हो : भारत का सांस्कृतिक पतन ....20
भोजन की बात करें तो हम इतने भाग्यशाली है कोई दूसरा देश उसकी कल्पना नहीं कर सकता .....21
भारत में गीत संगीत का विकास जलवायु एवं वातावरण के अनुसार हुआ : भारत का सांस्कृतिक पतन .....23
पेप्सी से किये गए अनुबंध, तोड़े गए सभी कानून किये झूठे दावे .....24
कोक-पेप्सी से कैंसर : बाबा रामदेव के बाद अब अमेरिका ने माना, शोध में साबित हुआ .....25
शाकाहारी खाना खाने वाले लोगों को बीमारियों से दूर रखता है शाकाहार जीवन .....26
भारत का स्वर्णिम अतीत .....27
भारतवासियों ने विश्व को कपड़ा पहनना एवं बनाना सिखाया है : .....27
भारत में ७ लाख ३२ हज़ार गुरुकुल एवं विज्ञान की २० से अधिक शाखाएं थीं.....29

# आभार

इस पुस्तक के लेख , राजीव दीक्षित के द्वारा बोले गये है । काफी लोगो के उनके बोले गये भाषणों को हिन्दी में अनुवादित करने की कोशिश की है । हमें आभार है ।

- **IBTL http://hindi.ibtl.in/all-news/rajiv-bharat**

अगर आपके पास, राजीव जी के अन्य लेख है तो आप मुझे Email कर दे , मै इसमें सम्मलित कर दूँगा narendra@narendrasisodiya.com

# स्वदेशी के प्रखर वक्ता, माँ भारती के पुत्र स्वर्गीय भाई राजीव दीक्षित

स्वदेशी के प्रखर प्रवक्ता, चिन्तक , जुझारू निर्भीक व सत्य को द्रढ़ता से रखने की लिए पहचाने जाने वाले भाई राजीव दीक्षित जी 30 नवम्बर 2010 को भिलाई (छत्तीसगढ़ ) में शहीद हो गए | वे भारत स्वाभिमान और आज के स्वदेशी आन्दोलन के पहले शहीद हैं | राजीव भाई भारत स्वाभिमान यात्रा के अंतर्गत छत्तीसगढ़ प्रवास पर थे | 1 दिसंबर को अंतिम दर्शन के लिए उनको पतंजलि योगपीठ में रखा गया था | राजीव भाई के अनुज प्रदीप दीक्षित और परमपूज्य स्वामीजी ने उन्हें मुखाग्नि दी | परमपूज्य स्वामी रामदेवजी महाराज व आचार्य बालकृष्णजी ने राजीव भाई के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है | संपूर्ण देश में 1 दिसंबर को ३ बजे श्रधांजलि सभा का आयोजन किया गया |

**राजीव भाई के बारे में** - राजीव भाई पिछले बीस वर्षों से बहुराष्ट्रीय कंपनियों और बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद के खिलाफ तथा स्वदेशी की स्थापना के लिए संघर्ष कर रहे थे | वे भारत को पुनर्गुलामी से बचाना चाहते थे | वे उत्तरप्रदेश के नाह गाँव में जन्मे थे | उनकी प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा फिरोजाबाद में हुयी उसके बाद 1984 में उच्च शिक्षा के लिए वे इलाहबाद गए | वे सैटेलाईट टेलीकम्युनिकेशन में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे लेकिन अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़कर देश को विदेशी कंपनियों की लूट से मुक्त कराने और भारत को स्वदेशी बनाने के आन्दोलन में कूद पड़े | शुरू से वे भगतसिंह, उधमसिंह, और चंद्रशेखर आजाद जैसे महान क्रांतिकारियों से प्रभावित रहे | बाद में जब उन्होंने गांधीजी को पढ़ा तो उनसे भी प्रभावित हुए |

**भारत को स्वदेशी बनाने में उनका योगदान** - पिछले २० वर्षों में राजीव भाई ने भारतीय इतिहास से जो कुछ सीखा उसके बारे में लोगों को जाग्रत किया | अँगरेज़ भारत क्यों आये थे, उन्होंने हमें गुलाम क्यों बनाया, अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता, हमारी शिक्षा और उद्योगों को क्यों नष्ट किया, और किस तरह नष्ट किया| इस पर विस्तार से जानकारी दी ताकि हम पुनः गुलाम ना बन सकें | इन बीस वर्षों में राजीव भाई ने लगभग 15000 से अधिक व्याख्यान दिए जिनमें कुछ हमारे पास उपलब्ध हैं| आज भारत में लगभग 5000 से अधिक विदेशी कंपनियां व्यापार करके हमें लूट रही हैं| उनके खिलाफ स्वदेशी आन्दोलन की शुरुआत की | देश में सबसे पहली स्वदेशी-विदेशी सूची की सूची तैयार करके स्वदेशी अपनाने का आग्रह प्रस्तुत किया| 1991 में डंकल प्रस्तावों के

खिलाफ घूम घूम कर जन जाग्रति की और रेलियाँ निकाली | कोका कोला और पेप्सी जैसे पेयों के खिलाफ अभियान चलाया और कानूनी कार्यवाही की |

1991-92 में राजस्थान के अलवर जिले में केडिया कंपनी के शराब कारखानों को बंद करवाने में भूमिका निभाई | 1995-96 में टिहरी बाँध के खिलाफ ऐतिहासिक मोर्चा और संघर्ष किया जहाँ भयंकर लाठीचार्ज में काफी चोटें आई | टिहरी पुलिस ने तो राजीव भाई को मारने की योजना भी बना ली थी| उसके बाद 1987 में सेवाग्राम आश्रम, वर्धा में प्रख्यात गाँधीवादी, इतिहासकार धर्मपाल जी के सानिध्य में अंग्रेजो के समय के ऐतिहासिक दस्तावेजों का अध्ययन करके देश को जाग्रत करने का काम किया | पिछले 10 वर्षों से परमपूज्य स्वामी रामदेव के संपर्क में रहने के बाद 9 जनवरी 2009 को परमपूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में भारत स्वाभिमान आन्दोलन का जिम्मा अपने कन्धों पर ले जाते हुए 30 नवम्बर 2010 को छत्तीसगढ़ के भिलाई शहर में भारत स्वाभिमान की रन भूमि में शहीद हुए |

## जानवरों को क़त्ल कर, मांस बढाने के अनाज खिलाते है, इसी भोजन की कमी से लाखों लोग भूख से मरते हैं

..... राजीव दीक्षित बताते है की अगर दुनिया मांस खाना बंद कर दे तो इस दुनिया में इतना अनाज पैदा हो रहा है की वो सारी दुनिया के एक एक व्यक्ति का तो पेट भर ही देगा इसके बराबर की दूसरी दुनिया और पैदा हो जाये तो भी सबका पेट भर देगा | सारी दुनिया में अभी ६५० करोड़ लोग है अगर मांस  खाना दुनिया में बंद हो जाये और मांस उद्योग पर ताला लग जाये तो जितना अनाज आज पैदा हो रहा है ये १३०० करोड़ लोगो के लिए परियाप्त हो जायेगा |

जानवरों को क़त्ल करने से पहले इनके शरीर में मांस बढाने के लिए वह जानवरों को अनाज खिलाते है | मांस उत्पादन करने वाली कंपनिया जानवरों को मनुष्य का भोजन करवाती है और वही भोजन की कमी हजारो लाखों लोगों को भूख से मार देती है | भारत जैसे देशो में कुल उत्पादित अनाज का ४०% जानवरों को खिलाया जाता है और अमेरिका जैसे देशो में ७०% खिलाया जाता है |

मतलब दुनिया औसतन आधा अनाज जानवरों को खिलाकर उनको मोटा बनाकर फिर उनका मांस कुछ लोग खाते है, इससे अच्छा सीधा लोग अनाज ही खाएं तो कोई भूखा नही रहेगा |

# भारत में विदेशी कंपनियों द्वारा की जा रही लूट : राजीव दीक्षित

भारत में जो ५०००+ विदेशी कंपनियां कार्यरत है इनमें से कुछ विदेशी कंपनियां ऐसी है जो सीधे अपनी शाखा स्थापित कर व्यापार कर रही है एवं कुछ कंपनियां ऐसी है जो भारत की कंपनियों के साथ समझौते करती हैं | कुछ कंपनियां तकनीकी रूप से तो कुछ वित्तीय रूप से समझौता करती है | इन कंपनियों को हमारे देश में बुलाया गया, नियमानुसार निमंत्रण दिया गया, हमारी सरकारों ने लाल-कालीन बिछाया एवं कुछ इस प्रकार स्वागत किया है जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी का कुछ नवाबों आदि ने किया था | सन १९१५ से हमारे देश में एक नीति चल रही है जिसका एक नाम है उदारीकरण, दूसरा नाम है वैश्वीकरण एवं एक और नाम है निजीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन, लिब्रलाइजेशन एवं प्राइवेटाइजेशन) इन शब्दों का उपयोग समाचार चैनलों द्वारा आपने : 'सरकार की वैश्वीकरण', 'निजीकरण-उदारीकरण की नीति के अनुसार' ये समझोते किये गए, के रूप में सुना होगा |

सरकार से जब यह कहा जाता है की आप इन विदेशी कंपनियों को क्यूँ बुला रहे है जबकि आप जानते है की हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है की मात्र एक विदेशी कंपनी के भारत में आने से भारत २००-२५० वर्ष परतंत्र रहा है | क्या ५०००+ विदेशी कंपनियों को भारत में बुलावा देना भारत की स्वतंत्रता को गिरवी रख देने जैसा नहीं होगा ? क्या हमारे देश की आज़ादी के साथ कोई समझौता तो नहीं किया जा रहा है ? क्या भारत की स्वतंत्रता संकट में तो नहीं आ रही है | हम भारतवासी अपना विकास स्वयं कर सकते है,

# क्या हमारे पास पूंजी की बहुत कमी है ?
# क्या हमारे पास तकनीकी नहीं है?
# क्या हमारे पास श्रम शक्ति नहीं है ?

हमे विदेशी कंपनियों की कोई आवश्यकता नहीं है | ऐसे कई तर्क जब सरकार से किये जाते है तो सरकार की ओर से चार उत्तर (तर्क) दिए जाते है |

१. इनके आने से पूंजी आती है
२. भारत का निर्यात (एक्सपोर्ट) बढ़ता है

३. लोगों को आजीविका मिलती है , गरीबी कम होती है
४ . तकनीकी आती है

चौथा तर्क सरकार सबसे अधिक बल से हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है, इन चार तर्कों के आधार पर हमारी सरकार विदेशी कंपनियों को बुलाती है | आपको इस बात की जानकारी अवश्य होगी की विदेशी कंपनियों को बुलाने में भारत की सरकार जो केन्द्र में कार्य करती है वह तो लगी ही हुई है राज्य सरकारे भी विदेशी कंपनियों को बुलाती है | भारत के कुछ उत्तर पूर्व के राज्यों को छोड़ कर भारत के लगभग सभी राज्य सरकारे विदेशी कंपनियों को बुलाती है | सरकार के उपरोक्त तर्कों को आधार बना, सत्य खोजने का प्रयास किया इस हेतु के लिए सरकारी प्रलेखों का ही उपयोग किया विगत कुछ वर्षों के सरकारी प्रलेखों (दस्तावेजो) का जब अध्ययन किया, समझा, पढ़ा तो पाया यह प्रलेख कुछ और कहानी कह रहे है एवं सरकार के दस्तावेज उसकी ही पोल खोल रहे है

# क्या विदेशी कंपनियों के आने से पूंजी आती है : राजीव दीक्षित

विदेश व्यापार मंत्रालय, उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय एवं वित्त मंत्रालय के कुछ आंकड़े देखें जाए तो विदेशी कंपनी भारत में पूंजी ले कर नहीं आती अपितु ले कर जाती है, आप एक छोटी बात सोच कर देंखें की कोई कंपनी अपनी पूंजी भारत में क्यों लाएगी ?

जब अमेरिका में पूंजी की अत्यधिक कमी है यूरोप में पूंजी की अत्यधिक कमी है एवं इसी कारण अमेरिका यूरोप के बड़े बड़े कारखाने बंद हो गए, कंपनियां बंद हो रही है, लेहमन ब्रदर्स, स्टैंडर्ड चार्टर्ड आदि ५६ बैंक पूंजी के आभाव में बंद हो गए | कारण यह है की पिछले ४० वर्षों में बैंको ने लोगों को अत्यधिक ऋण दिया एवं लोगों के पास बैंक का पैसा देने का सामर्थ्य नहीं रहा तो बैंको की पूंजी पूर्ण रूप से डूब गई, जब पूंजी डूब गई तो बैंक भी डूब गए बैंको में कंपनियों का पैसा रखा हुआ था जिसके कारण कंपनियां डूब गई | तो जिस अमेरिका में पूंजी की इतनी कमी हो वहाँ से कोई कंपनी पूंजी ले भारत में क्यों आयेगी ? यदि विदेश की कोई कंपनी भारत में आयेगी तो जान लीजिए वह अपनी पूंजी ले कर नहीं आएंगे यहाँ से पूंजी विदेश ले जाने हेतु आयेंगे क्यूंकि इसी लिए वह बनाए गए है इसी हेतु से उनकी रचना की गई है |

५००० विदेशी कंपनियों का अध्यन के उपरांत यह बात समझ में आती है कि यदि मान लिया जाए की अमेरिका की एक कंपनी भारत में ५० रु का निवेश करती है, ठीक एक वर्ष उपरांत जब उस कंपनी की बैलेंसशीट देखते है तो पता चलता है की उसने प्रत्येक ५० रु. पर १५० रु. भारत से कमा कर अमेरिका को भेज दिया, ०१ डॉलर ले कर आये एवं ०३ डॉलर ले कर चले गए | १९५१-५२, १९५२-५३, १९५३-५४ ... आदि रिज़र्व बैंक के आंकड़े, एकत्रित कर यह जानने का प्रयास किया कि कितनी पूंजी आती- जाती है कभी २० सहस्त्र (हज़ार) करोड़ की पूंजी आई तो उसी वर्ष ६० सहस्त्र (हज़ार) करोड़ की पूंजी यहाँ से चली गई निवेश के अनुपात में परोक्ष रूप से की जाने वाली लूट भी बढ़ती चली गई २५ सहस्त्र करोड़ आये तो ७५ सहस्त्र करोड़... ३० सहस्त्र करोड़ आये तो ९० सहस्त्र करोड़ यहाँ से चले गए | अर्थात अधिक पूंजी हमारे देश में आती नहीं है अपितु अधिक पूंजी तो हमारे देश से चली जाती है |

पहले एक वर्ष के आंकड़े निकाले उसके पश्चात १५-१६ वर्ष के  आंकड़े निकाले तो पता चला कि १ डॉलर यहाँ आ

रहा है तो ३-४ डॉलर यहाँ से जा रहा है, कभी कभी तो प्रति वर्ष ५ डॉलर तक जा रहा है | अब इसमें एक और महत्वपूर्ण बात है कि वह अपनी पूंजी लगाते है, एक वर्ष में उसका तीन गुना अर्जित कर लेते है एवं उसके पश्चात कई-कई वर्षों तक जैसे १० वर्ष, १५ वर्ष, २० वर्ष... तक बिना किसी पूंजी निवेश के वे यहाँ से करोड़ो डॉलर लूटते रहते है | सरल रूप से समझे तो ५० रु लगा के उन्होंने व्यापार प्रारंभ किया एवं पहले वर्ष ही १५० रु. अर्जित कर लिए तो तीन गुना तो वे ले ही गए अब दूसरे वर्ष में २०० रु., तीसरे वर्ष में ३०० रु. इसी क्रम में प्रति वर्ष जो पूंजी जायेगी एक वर्ष उपरांत वह यहाँ से पूंजी की लूट है ना की पूंजी का भारत में प्रवेश यह बहुत महत्व की एवं समझने की बात है |

एक और महत्वपूर्ण जानकारी यह है की जब भी कोई विदेशी कंपनी भारत में पूंजी लाती है तो, आपको जान आश्चर्य होगा की वह अपने साथ बहुत थोड़ी सी पूंजी ले कर आती है ... बहुत थोड़ी एवं बाकी सारी पूंजी वे व्यापार के लिए भारत से ही एकत्रित करते है | हमारे देश में जो बड़ी बड़ी विदेशी कंपनियों की चर्चा की जाती है उसमें सबसे बढ़ी कंपनी है " हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड " आपको नाम से भ्रम होगा किंतु इसका वास्तविक नाम यूनिलीवर है | यह ब्रिटेन एवं हॉलेंड के संयुक्त उपक्रम की कंपनी है | यह जब सबसे पहले सन १९३३ में भारत में व्यापार करने आई तो इस कंपनी ने मात्र १५ लाख रु. का पूंजी निवेश किया जिसे शुरुआती चुक्ता पूंजी (इनिशिअल पेडअप कैपिटल) कहते है | यही पूंजी महत्व की होती है क्यूंकि इसके निवेश उपरांत जो लाभ होता है, उसी लाभांश का प्रयोग पुनः पूंजी के निवेश में वे लोग करते है | अब यह लाभ तो यहाँ उत्पन्न हुआ है यह तो स्वदेश से आया है | व्यापार के ६-८ माह उपरांत इन्होंने थोड़ा और निवेश किया कूल पहले वर्ष इन्होंने ३३ लाख रूपये का निवेश किया |

अब यह " हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड " भारत से जो लाभ अर्जित कर रही है एक वर्ष में वह १४ सहस्त्र (हज़ार) ७ सौ ४० करोड़ रु. आधिकारिक है जो वह अपनी बैलेंसशीट में दिखाते है जिसमें से २१७ करोड़ तो शुद्ध रूप से विदेश ले जाते है | मात्र थोड़ी सी पूंजी लगा कर विगत वर्षों में यह सहस्त्रों (हजारों) करोड़ ले गए | ऐसे ही एक और कंपनी है अमेरिका की " कोलगेट पॉमोलिव " मात्र १३ लाख रु. लगा कर प्रति वर्ष २१३ करोड़ रु विदेश ले जा रही है | नोवार्टिस, फिलिप्स, गुड ईयर, ग्लेक्सो, फाईज़र, एबोर्ट इंडिया लिमिटेड ... ऐसी न जाने कितनी कंपनियां है जिन्होंने बहुत थोड़ी पूंजी लगा कर कई-कई करोड़ भारत से लूट लिया एवं " प्रति वर्ष " लूट रहे है ...

उदाहरण से समझिए ब्रिटिश कंपनी ग्लेक्सो की शुरुआती चुक्ता पूंजी मात्र ८ करोड़ ४० लाख रु (लगभग) है जिसे लगा कर प्रति वर्ष ५३७ करोड़ ६६ लाख विदेश ले जा रही है दो वर्ष में १००० करोड़ से अधिक तीन वर्ष में १५०० करोड़ से अधिक, यह कंपनी भारत में पिछले ३० वर्षों से है | एक और बड़ी कंपनी है जो सबसे अधिक सिगरेट बेचती है भारत में आई.टी.सी. " इंडियन टोबेको कंपनी " के भ्रामक नाम से, इसका वास्तविक नाम " अमेरिकेन टोबेको कंपनी " है शुरुआती चुक्ता पूंजी मात्र ३७ करोड़ रु लगा प्रति वर्ष ३१२० करोड़ रु विदेश ले जा रही है | औसतन ५०० सिगरेट, उन्हें रखने हेतु डिबियाँ, उन्हें को रखने हेतु बड़े खोखे अदि के निर्माण में जितना कागज लगता है उसके कारण एक पेड़ कट जाता है | इस कंपनी की इस देश में प्रति वर्ष २० अरब से अधिक सिगरेट बिकती है अर्थात लगभग चौदह करोड़ पेड़ यह कंपनी प्रति वर्ष कटवा देती है |

हम भारतीय अपने स्वभाव एवं संस्कार से पेड़ लगाते है, सरकर हमे कहती है पेड़ लगाओ और इस देश की विचित्र

स्थिति क्या है की आई.टी.सी चौदह करोड़ पेड़ कटती है तो वह भारत सरकार की दृष्टि में अपराध नहीं है किंतु यदि गाँव का कोई साधारण व्यक्ति जंगल में जा पेड़ काट लकड़ी ले आता है तो उसे दण्डित किया जाता है | अब तो ऐसी हास्यास्पद स्थित है की जो पेड़ आपने लगाया, मैंने लगाया अपने खेत में लगाया उसे भी आप नहीं काट सकते न्यायिक दृष्टि से अपराध माना जाता है हमारे देश में सहस्त्रों वनवासी, आदिवासी भाई बहनों पर अभियोग चल रहा है की उन्होंने अपने घर में रोटी बनाने हेतु किसी पेड़ से, जंगल से लकड़ी काटी | रोटी बनाने के लिए लकड़ी काटी तो अपराध है एवं सिगरेट निर्माण हेतु करोड़ो पेड़ कट गए तो उसे सरकार अपराध मानती ही नहीं है | स्पष्ट है की विदेशी कंपनियों के कारण भारत से पूंजी जा रही है एवं जो दुष्परिणाम हो रहे है वह अलग हैं ... अगला भाग आगे पढ़ें

# क्या विदेशी कंपनियों के आने से भारत का निर्यात बढ़ता है : राजीव दीक्षित

(भाग ०२) से आगे पढ़ें ... हमने प्रयास किया कि भारत के पिछले ६३-६४ (63-64) वर्षों के निर्यात के आंकड़े की खोज की जाए। वह आंकड़े हमे प्राप्त भी हुए, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं भारतीय रिज़र्व बैंक के पुस्तकालय से भारत के विगत वर्षों के निर्यात के आकड़े हमे मिले।

जानकारी में यह आया की जैसे-जैसे विदेशी कंपनियां भारत में आ रही है हमारा निर्यात कम हो रहा है जब विदेशी कंपनियां नहीं थी तब हम बहुत अधिक निर्यात करते थे। किंतु जबसे विदेशी कंपनियों का आना प्रारंभ हुआ निर्यात घटता ही जा रहा है। सन १८१३-१८५० (1813-1850) के मध्य में अंग्रेजी तंत्र ने भारत के कई सर्वेक्षण करवाए जैसे आर्थिक, शिक्षा, चिकित्सा एवं सामाजिक स्थिति का सर्वेक्षण आदि

जिसमें से आर्थिक आरक्षण के आकड़े कहते है की जब भारत में अंग्रेजो की केवल एक कंपनी थी ईस्ट इंडिया उस समय संपूर्ण विश्व में हम निर्यात करते थे जिसका भाग सकल विश्व के निर्यात में ३३% (33) था। महत्वपूर्ण बात यह है की यह निर्यात ईस्ट इण्डिया कंपनी नहीं करती थी, हम स्वयं करते थे। उनका निर्यात तो बहुत मामूली सा होता था। १८४० (1840) के कुल निर्यात के आंकड़े  निकालने पर पता चलता है। यदि भारत का कुल निर्यात १०० रु (100) का होता था तो ईस्ट इंडिया कंपनी का निर्यात उसमें मात्र ३ रु ६० पैसे (3.60) का होता था। इस बात को ठीक से समझिए हम भारतीय व्यापारी एवं उद्योगपति सीधे दूसरे देशों में जाकर अपनी वस्तुएं विक्रय (बेचते) करते थे।

१०० रु (100) की तो, ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से वस्तु क्रय (खरीद) कर विदेशों में ३.६० रु (3.60) का विक्रय करती थी। यह तब की स्थिति थी जब भारत में केवल एक विदेशी कंपनी थी। अब तो विदेशी कंपनियों की संख्या बढ़ कर ५००० (5000) हो गई तो क्या होना चाहिए ?.... निर्यात बढ़ना चाहिए ! किंतु आकड़े बता रहे है की हमारा निर्यात स्वतंत्रता के पूर्व जितना था स्वतंत्रता के पश्चात उससे भी कम होता चला गया आपको कुछ वर्षों के अनुसार बताता हूँ विश्व में १८४० (1840) से हमारा निर्यात था ...

१९३८ (1938) तक आते आते हमारा निर्यात हो गया ४.५% (4.5)

१८४० - ३.३ % | 1940 - 3.3%

१९५० - २.२ % | 1950 - 2.2%

१९५५ - १.५ % | 1955 - 1.5%

१९६० - १.२ % | 1960 - 1.2%

१९६५ - १.० % | 1965 - 1.0%

१९७० - ०.७ % | 1970 - 0.7%

१९७५ - ०.५ % | 1975 - 0.4%

१९८० - ०.१ % | 1980 - 0.1%

१९९० - ०.०५ % | 1990 - 0.04%

१९९१ - ०.०४५ % | 1991 - 0.045%

१९९२ - ०.०४२ % | 1992 - 0.042%

१९९३ - ०.०४ % | 1993 - 0.04%

१९९४ - ०.३८ % | 1994 - 0.382%

इसी क्रम में २००८-२००९ (2008-09) में हमारा निर्यात ०.५% (0.5) अर्थात आधा प्रतिशत हमारा निर्यात है विश्व में जब मात्र एक विदेशी कंपनी थी हम अंग्रेजो द्वारा पदाक्रांत (गुलाम) थे तो निर्यात था ३३% (33) लेकिन अब ५००० (5000) विदेशी कंपनियां है तो केवल ०.५% (0.5) ही है। अब स्वयं उत्तर दे निर्यात बड़ा है अथवा घटा है ? ...

स्पष्ट है निर्यात बहुत तीव्रता से घट रहा है एवं विदेशी कंपनियां भारत का निर्यात नहीं बढाती है। तो क्या बढाती है ? विदेशी कंपनियां इसका उल्टा करती है भारत में आने के बाद भारत का आयत (इम्पोर्ट) बढाती है। क्यूंकि सभी विदेशी कंपनियों को निर्यात की अपेक्षा आयात करने में अधिक रूचि होती है क्यूंकि जब वह आयात करेंगे तो लाभ उनके देश को मिलेगा।

एक उदाहरण से समझिए-- अमेरिका की एक कंपनी भारत आती है, अब वह अमेरिका की वस्तुओं को भारत में ले कर आएगी विक्रय (बेचेंगे) करेगी तो लाभ अमेरिका को ही मिलेगा। इसी कारण उनका प्रयास रहता है की अमेरिकी वस्तुओं का आयात भारत में अधिकाधिक किया जाए जिससे भारत का अधिकाधिक लाभ अमेरिका जाए। तो वह कंपनी अपना शुद्ध लाभ ले कर ही जायेगी, किंतु अमेरिका से कच्चा माल, तकनीकी आदि क्रय (खरीद) कर भारत में ला कर विक्रय (बेचेंगे) करेंगे एवं उसकी पूंजी भी अमेरिका ले जायेंगे ये उनका दूसरा लाभ है।

जैसा आपको ज्ञात हुआ की जब ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में थी तब भारत के कुल निर्यात में उसका भाग मात्र ३.६% (3.6) था किंतु अब जो हमारा कुल निर्यात है उसका मात्र ५.५२ % (5.52) विदेशी कंपनियां करती है जबकि उनकी संख्या ५००० (5000) से अधिक हो गई है अगले भाग में पढें

# क्या विदेशी कंपनियों के आने से लोगों को आजीविका मिलती है, गरीबी कम होती है? : राजीव दीक्षित

जैसे जैसे विदेशी कंपनियां भारत में बढ़ रही है यहाँ गरीबी बढ़ती जा रही है, इसे समझने के लिए अगर इस तर्क को मान लें कि विदेशी कंपनियों के आने से देश की पूंजी बढ़ती है तो स्वाभाविक है कि गरीबी कम हो जानी चाहिए।

जब १९४७ (1947) में भारत स्वतंत्र हुआ तब इस देश में एक विदेशी कंपनी को हमने भगाया था जिसका नाम ईस्ट इंडिया कंपनी था किंतु इसके मात्र दो वर्ष पश्चात ही १५६ (156) विदेशी कंपनियों को बुला लिया गया। जवाहर लाल नेहरु ने १९४९-५० (1949-1950) में पहली औद्योगिक नीति बनाई, उन्होंने संसद में घोषणा की, कि हमारे पास पैसे कि कमी है अंग्रेज यहाँ से सब धन लूट कर ले गए है, कोष रिक्त है अतैव भारत का विकास करना है तो विदेशी पूंजी चाहिए, ऐसा लंबा भाषण १९४८ (1948) में लोकसभा में उन्होंने दिया।

जब भारत में १५६ विदेशी कंपनियां आई तब भारत में गरीबों कि संख्या सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग ४.५ (4.5) करोड़ थी। अब हमारे देश में विदशी कम्पनीयों की संख्या बढ़ कर ५००० (5000) हो गई तो १५६ कंपनियां जितनी पूंजी लायीं थी, ५००० कंपनियां उससे अधिक ही लायेंगी तो इसका अर्थ यह है पूंजी और बढ़ जायेगी तो गरीबी कम हो जायेगी लेकिन भारत सरकार के ही आंकडें हैं कि इस समय भारत में गरीबों की संख्या ८८ (88) करोड़ है। गरीबों कि संख्या में २१ गुना वृद्धि हुई है सीधा सा अर्थ है कि भारत कि लूट में अत्यधिक वृद्धि हुई है इसी कारण गरीबी कि संख्या बढ़ी है।

इसलिए प्रति वर्ष गरीबों कि संख्या में वृद्धि होती है क्यूंकि पूंजी यहाँ से लूट कर विदेशों में चली जाती है यहाँ पूंजी विदेश से आती नहीं है यह बात आपके समझ में आये तो बहुत अच्छा है क्यूंकि हमारे देश में सरकार कि भाषा बोलने वाले कई लोग है जब हम विदेशी कंपनियों को भगाने कि बात उठाते है तो वह प्रश्न उठाते है पूंजी कहाँ से आएगी? तो आप इन आकड़ो कि सहायता से बताइये कि पूंजी हमारी जा रही है और यदि हम इन विदेशी कंपनियों को भगा देते है। इनके अधिकार (लाइसेन्स) रद्ध कर देते है तो पूंजी का बाहर जाना रुक जाएगा तो इस देश में पूंजी बढ़ना, गरीबी, बेकारी का कम होना स्वतः प्रारंभ हो जाएगा। अगले भाग में पढेंगे : क्या विदेशी कंपनियों के आने से तकनीकी आती है?

# मेरी शिक्षा मातृभाषा में हुई, इसलिए ऊँचा वैज्ञानिक बन सका - अब्दुल कलाम

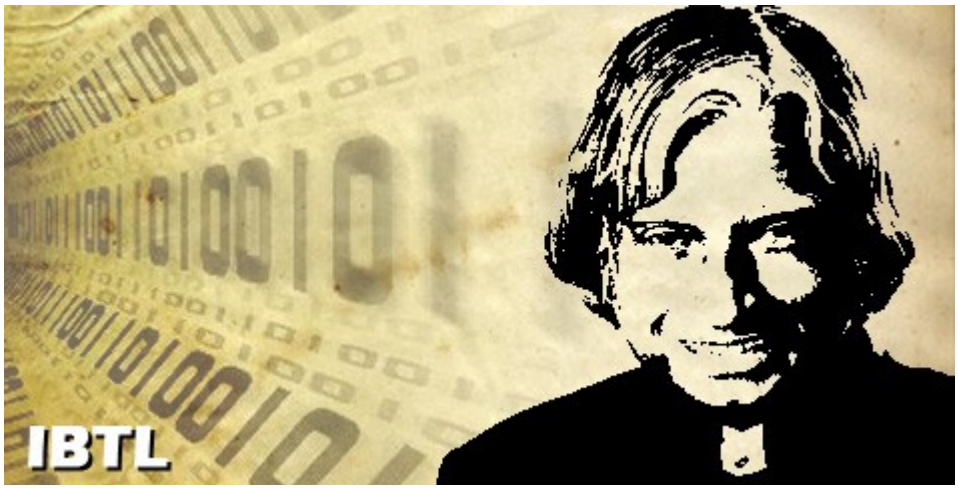


उच्च तकनीकी क्षेत्र जैसे उपग्रह निर्माण जिसे उच्च तकनीक कहा जाता जो बहुत कठिन एवं क्लिष्ट तकनीक होती है, उसमें आज तक कोई विदेशी कंपनी इस देश में नहीं आई | भारत जिसने १९९५ एक आर्यभट्ट नमक उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ा एवं उसके उपरांत हमारे अनेकों उपग्रह अंतरिक्ष में गए है | अब तो हम दूसरे देशों के उपग्रह भी अंतरिक्ष में छोड़ने लगे है इतनी तकनीकी का विकास इस देश में हुआ है यह संपूर्ण स्वदेशी पद्धति से हुआ है, स्वदेशी के सिद्धांत पर हुआ है एवं स्वदेशी आंदोलन की भावना के आधार पर हुआ है | इसमें जिन वैज्ञानिकों ने कार्य किया है वह स्वदेशी, जिस तकनीकी का उपयोग किया गया है वह स्वदेशी, जो कच्चा माल उपयोग किया गया है वह स्वदेशी, इसमें जो तकनीक एवं कर्मकार लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ वह सब स्वदेशी, इनको अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करने हेतु जो कार्य हुआ है वह भी हमारी प्रयोगशालाएं स्वदेशी इनके नियंत्रण का कार्य होता है वह प्रयोगशालाएं भी स्वदेशी तो यह उपग्रह निर्माण एवं प्रक्षेपण का क्षेत्र स्वदेशी के सिद्धांत पर आधारित है |एक और उदाहरण है " प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण " (मिसाइलों को बनाने) का क्षेत्र आज से तीस वर्ष पूर्व तक हम प्रक्षेपास्त्रों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर थे या तो रूस के प्रक्षेपास्त्र हमे मिले अथवा अमेरिका हमको दे किंतु पिछले तीस वर्षों में भारत के वैज्ञानिकों ने विशेष कर " रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन " (डी.आर.डी.ओ.) के वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम कर प्रक्षेपास्त्र बनाने की स्वदेशी तकनीकी विकसित की १०० ,२०० ,५०० ... से आगे बढ़ते हुए आज हमने ५००० किमी तक मार करने की क्षमता वाले प्रक्षेपास्त्रों को विकसित किया है | जिन वैज्ञानिकों ने यह पराक्रम किया है परिश्रम किया है वह सारे वैज्ञानिक बधाई एवं सम्मान के पात्र है, विदेशों से बिना एक पैसे की तकनीकी लिए हुए संपूर्ण स्वदेशी एवं भारतीय तकनीकी पद्धति से उन्होंने प्रक्षेपास्त्र बना कर विश्व के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया | जिन वैज्ञानिकों ने यह सारा पराक्रम किया सारा परिश्रम किया महत्व की बात उनके बारे में यह है की वह सब यहीं जन्मे, यहीं पले-पढ़े, यहीं अनुसंधान (रिसर्च) किया एवं विश्व में भारत को शीर्ष पर स्थापित कर दिया |

श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, भारत में प्रक्षेपास्त्रों की जो परियोजना चली उसके पितामहः माने जाते है | श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी से जब एक दिवस पूछा गया की आप इतने महान वैज्ञानिक बन गए, इतनी उन्नति आपने कर ली, आप इसमें सबसे बड़ा योगदान किसका मानते है तो उन्होंने उत्तर दिया था की " **मेरी पढ़ाई मातृभाषा में हुई है अतैव मैं इतना ऊँचा वैज्ञानिक बन सका हूँ** ", आपको ज्ञात होगा कलाम जी की १२ वीं तक की पढ़ाई तमिल में हुई है | उसके उपरांत उन्होंने थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख स्वयं को उसमें भी दक्ष बना लिया किंतु मूल भाषा उनकी

पढ़ाई की तमिल रही | कलाम जी के **अतिरिक्त इस परियोजना में जितने और भी वैज्ञानिक है उन सभी की मूल भाषा मलयालम, तमिल, तेलगु, कन्नड़, बांग्ला, हिंदी, मराठी, गुजराती आदि है** अर्थात हमारी मातृभाषा में जो वैज्ञानिक पढ़ कर निकले उन्होंने स्वदेशी तकनीकी का विकास किया एवं देश को सम्मान दिलाया है | परमाणु अस्त्र निर्माण एवं परिक्षण भी श्री होमी भाभा द्वारा स्वदेशी तकनीकी विकास के स्वप्न, उसको पूर्ण करने हेतु परिश्रम की ही देन है | अब तो हमने परमाणु अस्त्र निर्माण एवं परिक्षण के अतिरिक्त उसे प्रक्षेपास्त्रों पर लगा कर अंतरिक्ष तक भेजने में एवं आवश्यकता पढ़ने पर उनके अंतरिक्ष में उपयोग की सिद्धि भी हमारे स्वदेशी वैज्ञानिकों ने अब प्राप्त कर ली है | यह भी संपूर्ण स्वदेशी के आग्रह पर हुआ है | अब तो हमने पानी के नीचे भी परमाणु के उपयोग की सिद्धि प्राप्त कर ली है संपूर्ण स्वदेशी तकनीकी से निर्मित अरिहंत नामक परमाणु पनडुब्बी इसका ज्वलंत प्रमाण है | जल में, थल में, अंतरिक्ष में हमने विकास किया | यह सारी विधा का प्रयोग स्वदेशी वैज्ञानिकों ने किया, स्वदेशी तकनीकी से किया, स्वदेशी आग्रह के आधार पर किया एवं स्वदेशी का गौरव को संपुर्ण विश्व में प्रतिष्ठापित किया |

यह कार्य उच्च तकनीकी के होते है प्रक्षेपास्त्र, उपग्रह, परमाणु विस्फोटक पनडुब्बी, जलयान, जलपोत महा संगणक (सुपर कंप्यूटर) निर्माण आदि एवं इन सब क्षेत्रों में हम बहुत आगे बढ़ चुके है स्वदेशी के पथ पर | स्वदेशी के स्वाभिमान से ओत प्रोत भारत के महा संगणक यंत्र " परम १०००० " के निर्माण के जनक विजय भटकर (मूल पढ़ाई मराठी ) की कथा सभी भारतियों को ज्ञात है, उनके लिए प्रेरक है | इतने सारे उदाहरण देने के पीछे एक ही कारण है वह यह की भारत में तकनीकी का जितन विकास हो रहा है वह सब स्वदेशी के बल से हो रहा है, स्वदेशी आग्रह से हो रहा, स्वदेशी गौरव एवं स्वदेशी अभिमान के साथ हो रहा है | नवीन तकनीकी हमको कोई ला कर नहीं देने वाला, विदेशी देश हमे यदि देती है तो अपनी २० वर्ष पुरानी तकनीकी जो उनके देश में अनुपयोगी, फैकने योग्य हो चुकी है | इसके उदाहरण है जैसे कीटनाशक, रसायनिक खाद निर्माण की तकनीकी स्वयं अमेरिका में बीस वर्ष पूर्व से जिन कीटनाशकों का उत्पादन एवं विक्रय बंद हो चुका है एवं उनके कारखाने उनके यहाँ अनुपयोगी हो गए है | अमेरिका १४२ विदेशी कंपनियों के इतने गहरे गहरे षड्यंत्र चल रहे है इन्हें समझना हम प्रारंभ करे अपनी आंखे खोले, कान खोले दिमाग खोले एवं इनसे लड़ने की तैयारी अपने जीवन में करे भारत स्वाभिमान इसी के लिए बनाया गया एक मंच है जो इन विदेशी कंपनियों की पूरे देश में पोल खोलता है एवं पूरे देश को इनसे लड़ने का सामर्थ्य उत्पन्न करता है | हमे इस बात का स्मरण रखना है की इतिहास में एक भूल हो गई थी जहांगीर नाम का एक राजा था उसने एक विदेशी कंपनी को अधिकार दे दिया था इस देश में व्यापार करने का परिणाम यह हुआ की जिस कंपनी को जहांगीर ने बुलाया था उसी कंपनी ने जहांगीर को गद्दी से उतरवा दिया एवं वह कंपनी इस देश पर अधिकार कर लिया ०६ लाख ३२ सहस्त्र ०७ सौ इक्यासी (६,३२,७००) क्रांतिकारियों ने अपने बलिदान से उन्हें भगाया था |

आवश्यकता अविष्कार की जननी है हमे जिसकी आवश्यकता थी हमने उसका अविष्कार किया विश्व के देशों में जो दवाईयां २०-२० वर्षों से बंद हो गई है जिन्हें 'क', 'ख', 'ग' वर्गीय विष (ए,बी,सी, क्लास ) जो बहुत ही भयंकर विष है ऐसी दवाईयां ला कर विदेशी कंपनियां भारत में विक्रय करती है ऐसी ५ सहस्त्र दवाइयों की हमने सूची बनाई है जिनमें से कुछ **औक्सिफन बुटाजोंन, फिनाइल बुटाजों, एक्टइमाल, एल्जिरिअल, बूटा कार्दिडान, बूटा प्रोक्सिवान ये सात दवाएँ** है जो ब्रिटेन में पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, ईटली, फिनलैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मलेशिया, इज़राइल, जॉर्डन एवं हमारे पड़ोसी बंगलादेश तक में पिछले २० वर्षों से प्रतिबंधित है | जब यह सहस्त्रों करोड़ो रूपये लूटती है उसका बहुत दु:ख होता है १९४७ तक मात्र १० करोड़ रु. की दवाएँ विक्रय करते थे आज

७० सहस्त्र करोड़ रु से भी अधिक की दवाएँ विक्रय करते है जिनमें से अधिकांश की तो हमे आवश्यकता ही नहीं है जस्टिस हाथी कमीशन ने स्पष्ट रूप से कहा था की भारत में जितने भी रोग है उनके निवारण हेतु एलोपेथी की मात्र ११७ प्रकार की दवाइयों की आवश्यकता है परंतु आज देश में ८४,००० (84,000) प्रकार की दवाइयों का विक्रय हो रहा है|

अत: हम सबको यह लूट समझनी होगी एवं इस मकडजाल से बहार निकलना होगा, समझना होगा - हम प्रातः आँख खुलते ही हम उनके चंगुल में फंस चुके होते हैं बस सवेरा हुआ हम इन कंपनियों द्वारा निर्मित ब्रुश, टूथपेस्ट हमारे हाथों में आ जाते हैं फिर साबुन हैं क्रीम हैं ब्लेड हैं तरह तरह के सौंदर्य प्रसाधन हैं लगभग हम शरीर की सफाई ही प्रारंभ करते हैं इन कम्नियों के द्वारा बनाये गए सामानों से आज भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से उन कंपनियों की गुलाम बन चुकी है ...

## फुटपाथ पर जीने वाले लोगों की संख्या, विदेशी कंपनियों के कारण बढ़ रही है

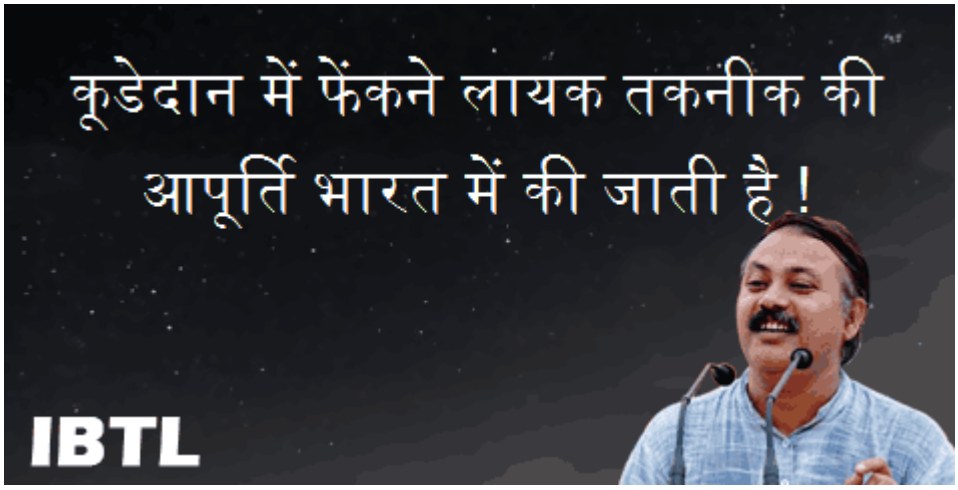


**गुलामी नए रूप में** : आज चारों ओर घन अन्धकार है एक समाज नहीं एक देश नहीं समुची मानवता एवं समूची प्रकृति के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा पैदा हो चुका है भारत की नहीं विश्व के अनेकों देश विदेशी कंपनियों की गिरफ्त में अपनी राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए फडफडा रहे हैं स्वविलाम्बी उत्पादों का जहाँ भी जो भी समाज में शेष है वह भी विदेशी कंपनियों के विनाशकारी विकास के चलते नष्ट हो रहा है पुश्तैनी धंधों और कुटीर उद्योगों के उजड़ने से उजड़े लोग शहरों के चौराहों पर खड़े होकर अपना भ्रम बेचने वालों की भीड़ बढा रहे हैं झोपडपट्टियों की संख्या बढती जा रही है साथ ही महानगरों में सड़कों के फुटपाथों पर जीवन जीने वाले लोगों की संख्या बढती जा रही है यह सब पूंजी वादी ढांचे की क्रूर अनिवार्यता है जो पूरी ही रही है।

**झूठ पर टिका व्यापार** : ये विदेशी कम्पनियाँ विकास के नाम पर आतीं है इनके फलने फूलने के पीछे कुछ मिथ्या धारणाएं काम करती है जैसे ये अपने साथ पूंजी लाएगीं, हमें आधुनिक तकनीक देंगीं, लोगों को रोज़गार के अवसर देंगीं, हमारा निर्यात बढ़ेगा, लेकिन यह कम्पनियाँ करती इसका उलट हैं विकास के नाम पर सदियों से देश में चलने वाला देसी कारोबार हुनर, हस्तशिल्प को उजाड दिया जाता है और उसमें लगे करोड़ों लोगों की आजीविका छीन ली

जाती है पूंजी लाने का मात्र दंभ भरा जाता है ये निगमें कुल लागत की ९५% पूंजी राष्ट्रीय संसाधनों से उगाहती हैं मात्र ५% अपने साथ लातीं हैं तकनीक के नाम पर पश्चिम में चलन से बाहर हो गयी और कूडेदान में फेंकने लायक तकनीक की आपूर्ति होती है अधिकांश विदेशी कम्पनियाँ ऐसे क्षेत्रों में कार्य करती हैं जहाँ अधिनिक तकनीक की आवश्यकता ही नहीं होती है उनके सभी वायदे झूठे होते हैं ये ना तो निर्यात बढती हैं ना ही विदेशी मुद्रा का संकट दूर करतीं हैं। इनके कारण देश ऋणपाश के कगार पर पहुँच जाते हैं विदेशी कर्ज के ब्याज को चुकाने के लिए और कर्ज लेना पड़ता है कर्ज देने वाली विदेशी संस्थाओं के इशारे पर सरकारों को देश की नीतियां निर्धारित करनी पड़ती हैं और देश वासियों के हितों को ताक पर रखा जाता है आज हमारे भारत देश की अर्थव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था के दुमछल्ले के रूप में काम कर रही है यह बात जनता व हर प्रबुद्ध देशवासी के समझने की है।

**शिकंजे में फँसी जिंदगी** : विदेशी कम्पनियाँ हमारे जीवन में इस तरह से छा चुकीं हैं कि लगता है कि अपनी कोई सोच ही ना बची हो हम यह सोच भी नहीं पाते कि हम प्रातः आँख खुलते ही हम उनके चंगुल में फंस चुके होते हैं सवेरा हुआ हम इन कंपनियों द्वारा निर्मित ब्रुश, टूथपेस्ट हमारे हाथों में आ जाते हैं फिर साबुन हैं क्रीम हैं ब्लेड हैं तरह तरह के सौंदर्य प्रसाधन हैं लगभग हम शरीर की सफाई ही प्रारंभ करते हैं इन कम्नियों के द्वारा बनाये गए सामानों से आज भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से उन कंपनियों की गुलाम बन चुकी है। उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में ७६% बाजार इन विदेशी कंपनियों के सामानों से भरे पड़े हैं दवाओं के क्षेत्र में लगभग ७५% दवाओं पर इनका कब्ज़ा और अंधिकांश दवाएं ऐसी हैं जिनका विश्व के बहुत से देशों प्रयोग नहीं होता अथवा वह प्रतिबंधित हैं। इस प्रकार दवाओं के नाम पर भी देशवासियों को जहर खिला रहीं हैं ये दवाएं, प्रतिवर्ष २००० करोड रु से अधिक का लाभ लेकर जहरीली व गैरज़रूरी दवाएं बाज़ार में उतारी जाती हैं फलत: खेती बाज़ार की मोहताज हो गयीं हैं इनके द्वारा निर्मित उर्वरकों और कीटनाशक दवाओं के जहर से समूची जमीन, अबोह्वौर मानव स्वास्थ्य गंभीर खतरों से जूझ रहा है इन विदेशी कंपनियों की विशालकाय औद्योगिक संस्कृति बर्बर शोषण तथा विनाशकारी नीतियों के कारण पूरी दुनियां में आवाज़ उठने लगी है लेकिन भारत देश के नेता इन्हें पुरे जोशखरोश के साथ इन्हें आमंत्रित कर रहे हैं इन कंपनियों की गहरी साजिश और सरकार की नीतियों के कारण आज देश की सम्प्रभुता संकट में पड़ गयी है।

**मुक्ति का मार्ग** : असली मायने में देश की राजनैतिक स्वाधीनता को प्राप्त करने सांकृतिक पहचान बनाये रखने हेतु, समाज में गैरबराबरी को समाप्त करने हेतु भूखे पेट को एमन और सम्मान की रोटी देने के लिए आवश्यक है कि इन विदेशी कंपनियों को देश से बाहर निकाला जाये अतः यह आवश्यक है कि हम विदेशी कंपनियों व स्वदेशी कंपनियों के बनाये उत्पादों को जाने विदेशी कंपनियों के उत्पाद का बहिष्कार करें उनसे असहयोग करें स्वदेशी अपनाएं जिससे हर क्षेत्र में घुस कर जो उन्होंने जो लूटपाट मचाई है उसे छुटकारा पाकर हम अपने मन, समाज और देश का नव निर्माण कर सकें।

साभार : विदेशी कंपनियों कि जंजीरों में जकडा दैनिक जीवन, संपादक (स्वराज प्रकाशन समूह (राजीव दीक्षित))

# अंग्रेजो ने भारत से कितना धन लूटा एवं यह कैसे प्रारंभ हुआ ? : भाई राजीव दीक्षित

लूट के जो आंकड़ें प्राप्त हैं वह ही इतने बड़े है कि यदि ज्ञात एवं अज्ञात आंकड़ों का मिलान किया जाए तो सर चकरा जाता है। २३ जून सन १७५७ जब प्लासी का ' युद्ध ' होना था " मीर जाफर " ने १ करोड़ स्वर्ण मुद्राओं एवं उच्च राजपद की लालसा में विश्वासघात किया था। अपने ही राजा (सिराज उद्दौला) के १८ सहस्त्र (हज़ार) भारतीय सैनिकों को मात्र ३५० अंग्रेज सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण के लिए बाध्य किया था अर्थात युद्ध हुआ ही नहीं था वरन एक संधि हुई थी, जिसमें एक सेठ " अमीचंद " रॉबर्ट क्लाईव की ओर से साक्षी बने थे।

अब इस संधि का परिणाम यह हुआ की अंग्रेजो को बंगाल की दीवानी (कर लेने का अधिकार) एवं विशेष कर कलकत्ता का राज्य प्राप्त हुआ जहाँ उन्होंने पहले मीर कासिम को राजा बनाया, उसे हटाया मीर जाफर को राजा बनाया, उसे हटाया एवं सत्ता औपचारिक रूप से भी अपने हाथ में कर ली। सात वर्षों तक रोबर्ट क्लाईव ने कलकत्ता को लूटा। जब लूट कर लंदन ले गया तब लंदन की संसद में उससे बहस की गई कि तुम भारत से क्या लाए हो, तो उसने कहा " सोने चांदी से भरे जहाज लाया हूँ " मंत्री पूछते है कितने लाए हो " उसने कहा कि ९०० जहाज लाया हूँ "

प्रधानमंत्री अचंभित हो जाते है पूछते है, यह कहाँ से लाए हो, सम्पूर्ण भारत से ?
तब रॉबर्ट क्लाईव कहता है संपूर्ण भारत से नहीं भारत के एक नगर कलकत्ता से संपूर्ण भारत में तो पता नहीं कितना सोना चांदी है।

आगे उससे पूछा गया इसका मूल्यांकन क्या है,
तब वह कहता है ' वन थाउजेंड मिलियन स्टर्लिंग पाउंड ' सन १७५७ के स्टर्लिंग पौंड की कीमत ३०० गुना कम हुई है (जैसे दस-२० पैसा पहले अधिक हुआ करता था)

थाउजेंड = १,००० (एक सहस्त्र या एक हज़ार)
मिलियन = १०,००० (दस लाख)
पाउंड = ८० रु (औसत अभी तो ८२ है)
अर्थात १००० * १०००० * ३०० * ८० आप स्वयं निकल ले, लाख करोड़ में उत्तर आयेगा।
{ = २४०,००,००,००,००० रु }

मात्र एक विदेशी का संस्था अधिकारी रोबर्ट क्लाईव भारत से इतना धन ले गया था। पहले रॉबर्ट क्लाईव आया, उसने लूटा, तदुपरांत वॉरन हेस्टिंग्स, कर्ज़न, लिल्लिथ्गो, डिकिंस, विलियम वेंटिंग, कोर्नवोलिस ऐसे ऐसे भारत में ८४ अधिकारी आये थे।

यह लूट का क्रम वर्षों तक चलता रहा अभी २०११ के अंत में खोजा गया चाय, मसालों एवं चांदी से भरा SS Mantola जहाज भी इसी पुस्तक का एक पन्ना है। भारत को ईश्वर ने बहुत धनवान बनाया है बहुत से देशी को ईश्वर

ने ही निर्धन बनाया है उनके यहाँ पूरे वर्ष में केवल ३-४ महीने सूर्य के दर्शन होते हैं। वही एक दो अन्न पैदा होते है गेहूँ-आलू, आलू-प्याज। धरती में भी खनिज पदार्थो की कमी रहती है। भारत तो कई कई वर्षों की लूट के बाद इतना अधिक धनवान है कि संभवतः केवल एक दो महादेश जैसे अफ्रीका आदि से ही उसकी तुलना की जा सकती है। इससे इस बात को भी बल मिलता है कि कई सहस्त्र वर्षों से भारत एवं अफ्रीका के बीच व्यापर इतना सफल कैसे रहा।

## भारत का सांस्कृतिक पतन

# भारतीय भाषाओँ के विरुद्ध षड़यंत्र

ऋषि भूमि, राम भूमि, कृष्ण भूमि, तथागत की भूमि... भारत के गौरवशाली अतीत को यदि शब्दों में एवं वाणी में कालांतर तक भी बांधने का प्रयास किया जाए तो संभव नहीं है। वर्तमान में पश्चिम का अंधानुकरण करने से जो भारत का सांस्कृतिक पतन हुआ है वह निश्चय मानिए आपके प्रयासों से समाप्त होगा। इस पश्चिम के अंधानुकरण एवं मानसिक परतंत्रता के रोग के उपचार हेतु इसका कारण प्रभाव आदि जानना भी नितांत आवश्यक है।

भारत पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से २०० से २५० वर्षों तक अंग्रेजो का शासन रहा, अल्पावधि तक फ्रांसीसियों एवं डच आक्रान्ताओं का प्रभाव भी रहा। भारत के कुछ भूभागो केरल, गोवा (मालाबार का इलाका आदि ) पर तो, पुर्तगालियों का ४००–४५० वर्षों तक शासन रहा।

भारत पर ७–८ शताब्दी से आक्रमण प्रारंभ हो गए थे। मोहाम्मदबिन कासिम, महमूद गजनवी ,तैमूर लंग, अहमद शाह अफदाली, बाबर एवं उसके कई वंशज इन आक्रांताओंके का भी शासनकाल अथवा प्रभावयुक्त कालखंड कोई बहुत अच्छा समय नहीं रहा भारत के लिए, सांस्कृतिक एवं सभ्यता की दृष्टि से।

भिन्न भिन्न आक्रांताओ के शासनकाल में भारत में सांस्कृतिक एवं सभ्यता की दृष्टि से कुछ परिवर्तन हुए। कुछ परिवर्तन तो तात्कालिक थे जो समय के साथ ठीक हो गए, लेकिन कुछ स्थाई हो गए। जब तक भारत पर आक्रांताओ का शासन था तब तक हम पर परतंत्रता थी। सन १९४७ की तथाकथित सत्ता के हस्तांतरण के उपरांत

शारीरिक परतंत्रता तो एक प्रकार से समाप्त हो गई किंतु मानसिक परतंत्रता से अब भी हम जूझ रहे है। यह अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के लिए जुझारूपन हमारे रक्त में है, जो कभी सपाप्त नहीं हो सकता। इसी के कारण **हमारी वर्तमान संस्कृति में अधकचरापन आ गया है "न पूरी ताकत से विदेशी हो पाए, न पूरी ताकत से भारतीय हो पाए, हम बीच के हो गए, खिचड़ी हो गए**" !!

**भारतीय भाषाओँ के विरुद्ध एक षड़यंत्र** -

एक सबसे बड़ा विकार स्थानीय भाषा एवं बोली के पतन के रूप में आया। हम आसाम में, बंगाल में, गुजरात में, महाराष्ट्र में रहते है वही की बोली बोलते है, लिखते है, समझते है परंतु सब सरकारी कार्य हेतु अंग्रेजी ओढ़नी पड़ती है। यह विदेशीपन, अंग्रेजीपन के कारण और भी भयावह स्थिति का तब निर्माण होता है जब नन्हे नन्हे बालको को कान उमेठ-उमेठ कर अंग्रेजी रटाई जाती है। सरकार के आकड़ो के अनुसार जब प्राथमिक स्तर पर १८ करोड़ भारतीय छात्र विद्यालय में प्रथम कक्षा में प्रवेश लेते है तो अंतिम कक्षा जैसे उच्च शिक्षा जैसे अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग), चिकित्सा (मेडिकल), संचालन (मैनेजमेंट) आदि तक पहुँचते-२ तो **१७ करोड़ छात्र/छात्राएं अनुतीर्ण हो जाते है, केवल १ करोड़ उत्तीर्ण हो पाते है**। भारत सरकार ने समय समय पर शिक्षा पर क्षोध एवं अनुसंधान के लिए मुख्यतः तीन आयोग बनाए दौ. सि. कोठारी (दौलत सिंह कोठारी), आचार्य राममूर्ति एवं एक और... सभी का यही मत था की यदि भारत में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा व्यवस्था न हो अपितु शिक्षा स्थानीय एवं मातृभाषा में हो तो यह जो १८ करोड़ छात्र है, सब के सब उत्तीर्ण हो सकते है, उच्चतम स्तर तक |

विचार कर देखे शिक्षा मातृभाषा में नहीं होने का कितना अधिक दुष्परिणाम उन १७ करोड़ विद्यार्थियों को भोगना पड़ता है, इनमें से आधे से अधिक तो शुरुआत में ही बाहर हो जाते **कोई पांचवीं में तो कोई सातवीं में कुछ ८-८.५ करोड़ विद्यार्थी इस व्यवस्था के कारण सदैव के लिए बाहर हो जाते** है। यह कैसे दुर्व्यवस्था है जो प्रतिवर्ष १७ करोड़ का जीवन अंधकारमय बना देती है। अगर आप प्रतिशत में देखे तो ९५% सदैव के लिए बाहर हो रहे है। यह सब विदेशी भाषा को ओढ़ने के प्रयास के कारण, बात मात्र विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण होने की नहीं अपितु व्यवस्था की है।

दुर्भाग्य की पराकाष्ठा तो देखिये की जब कोई रोगी जब चिकित्सक के पास जाता है तो वह चिकित्सक उसे पर्ची पर दवाई लिख के देता है, मरीज उसे पढ़ नहीं सकता वरन कोई विशेषज्ञ ही पढ़ सकता है। **कितना बड़ा दुर्भाग्य है उस रोगी का की जो दवा उसको दी जा रही है, जो वह अपने शरीर में डाल रहा है, उसे स्वयं न पढ़ सकता न जान नहीं सकता की वह दवा क्या है ?** उसका दुष्परिणाम क्या हो सकता है उसके शारीर पर ? यदि वह जोर दे कर जानना भी चाहे तो डाक्टर उसे अंग्रेजी भाषा में बोल देगा, लिख देगा उसे समझने हेतु उसे किसी और विशेषज्ञ के पास जाना होगा।

**क्योँ बंगाल में, असम में, गुजरात में, महाराष्ट्र में, हिंदी भाषी राज्यों आदि में दवाइयों का नाम क्रमषः बंगला में, असमिया में, गुजरती में, मराठी में, हिंदी में आदि में नहीं है**। यह बिलकुल संभव एवं व्यावहारिक है। संविधान जिन २२-२३ भाषओं को मान्यता देता है उनमें क्योँ नही ? राष्ट्रीय भाषा हिंदी (हम मानते है) में क्यों नहीं जिसे समझने वाले ८० से ८५ करोड़ है और तो और सरकार ने नियम बना रखा है दवाइयों के नाम लिखे अंग्रेजी में,

चिरभोग (प्रिस्किप्शन) लिखे अंग्रेजी में, छापे अंग्रेजी में आदि। जिस भाषा (अंग्रेजी) को कठिनाई से १ से २ प्रतिशत लोग जानते है।

## विद्यालयों से लेकर न्यायालयों तक अंग्रेजी भाषा की गुलामी : भारत का सांस्कृतिक पतन

ऐसा ही सत्यानाश हमने न्याय व्यवस्था का कर रखा है, उदाहरण : मान लीजिए मैं असम का व्यक्ति हूँ मुझे कुछ न्याय संबंधित परेशानी है तो पहले असमियां में वकील को समझाओ, वकील भाषांतर करे अंग्रेजी में उपरांत वह जज को समझाए। जज विचार कर अंग्रेजी में वकील को समाधान सुनाये, वकील अंग्रेजी का भाषांतर करे असमियां में, उपरांत मुझे समझावे... अरे भाई क्या सत्यानाश कर रखा है। इन सब में कितना समय एवं शक्ति की नष्ट हो रही है अगर यह भाषा की परतंत्रता नहीं होती तो मैं सीधे अपनी दुविधा, परेशानी न्यायाधीश को असमिया में बता देता और वह उसका समाधान कर मुझे बता देता | किसी तीसरे व्यक्ति (न्यायज्ञ) की आवश्यकता ही नहीं पड़ती भाषांतर के लिए।

बच्चों का निजी एवं कान्वेंट विद्यालयों में पिता माता के अंग्रेजी नहीं आने के कारण प्रवेश नहीं मिल पाना, किससे छिपा है ? आपका बालक कितना ही मेधावी क्यों न हो अगर माता पिता को अंग्रेजी न आती हो तो, उन्हें निर्लज्जता के साथ कह दिया जाता है आप किसी और भाषा का विद्यालय खोज ले एवं बालक/बलिका को प्रवेश नहीं दिया जाता। ऐसे कान्वेंट विद्यालयों का तर्क होता है की अगर आपको अंग्रेजी नहीं आती तो जो गृहकार्य हम बच्चे को देंगे उसमें आप कैसे सहायता करेंगे ? इसी अन्याय के कारण करोड़ो-करोड़ो बच्चे इन विद्यालयों में केवल इस लिए नहीं जा पाते क्यूंकि उनके माता पिता को अंग्रेजी नहीं आती और अगर कभी प्रवेश हो ही जाता है तो मात्र अंग्रेजी नहीं आने के कारण उसमें कम अंक प्राप्ति के कारण विद्यार्थियों का समूल प्रतिशत घट जाता है एवं कभी कभी तो पुनः सभी विषयों की तयारी करनी पड़ती है।

# अंग्रेजी कोई बड़ी भाषा नहीं है, केवल १४ देशों में चलती है जो गुलाम रहे हैं : भारत का सांस्कृतिक पतन

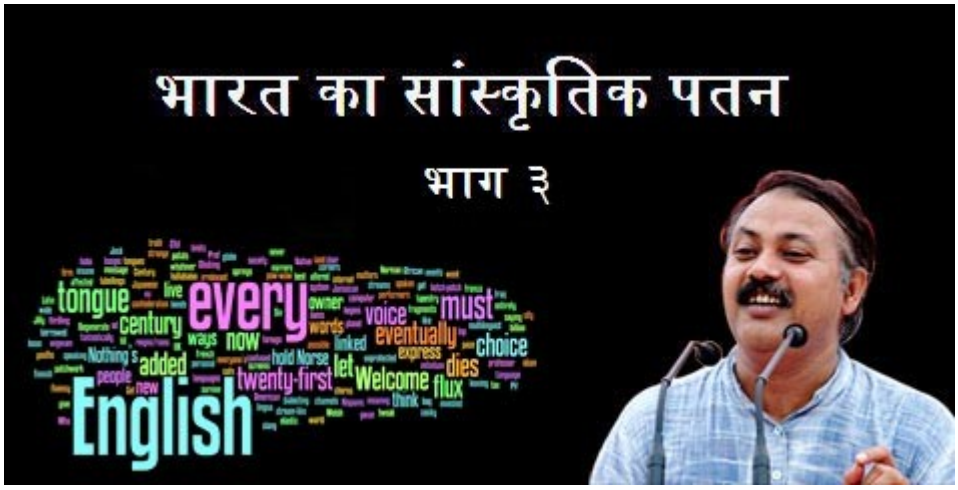


अंग्रेजी कोई इतनी बड़ी भाषा नहीं है, जैसी की हमारे मन में उसकी छद्म छवि है, विश्व के मात्र १४ देशों में अंग्रेजी चलती है एवं यह वही देश है जो अंग्रेजो के परतंत्र रहे है।

इनके इन देशों में अंग्रेजी का स्वयं विकास नहीं हुआ है परतंत्रता के कारण इन्हें इसके लिए बाध्य होना पड़ा। विश्व की प्रमुख संस्थाए अंग्रेजी में कार्य नहीं करती, बहुत से देशों के लोग तो अंग्रेजी जानते हुए भी उसमें बात करना पसंद नहीं करते। जर्मनी में जर्मन में, फ्रांस में फ्रेंच में, स्पेन में स्पेनिश में, जापान में जापानी में, चीन में चीनी में आदि देशों में अपनी भाषा में ही सरकारी कार्य भी किया जाता है। अंग्रेजी से निजात ही अच्छी है क्यूंकि इसमें हमारा विकास नहीं, मुक्ति नहीं।

संयुक्त राष्ट्र महासंघ के मानवीय विकास के लेखे जोखे में भारत लगभग १३४ में आता है बहुत से भारत से भी छोटे छोटे देश जो इस लेखे-जोखे में भारत से ऊपर आते है क्यूंकि उनमें अधिकांश अपनी मातृभाषा में कार्य करते है। स्वयं संयुक्तराष्ट्र भी फ्रेंच भाषा में कार्य करता है अंग्रेजी में तो वह अपने कार्यों का भाषांतर करता है अधिकांश भाषा विशेषज्ञ भी कहते है अंग्रेजी व्यकरण की दृष्टि से भी बहुत बुरी है।

भारत की सभी २२-२३ मातृभाषाएँ जो संविधान में स्वीकृत है, बहुत सबल है। उनमें से भी यदि सबसे छोटी भाषा को अंग्रेजी से तुलना करे तो वह भी अंग्रेजी से बड़ी है। उत्तर प्रांत के जो राज्य है, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम आदि उनमें जो सबसे छोटी भाषा एव बोलियां चलती है उनमें से भी सबसे छोटी भाषा है उसमें भी अंग्रेजी से अधिक शब्द है। जब सबसे छोटी भाषा भी अंग्रेजी से बड़ी है तो हम अंग्रेजी को क्यूँ पाल रहे है एवं हमारी सबसे बड़ी भाषा तो अंग्रेजी से कितनी बड़ी होगी। तकनिकी शब्द जो है न हम चाहे तो तात्कालिक रूप से जैसे के तैसे अंग्रेजी ले सकते।

लेकिन विचार की जो अभिव्यक्ति है वह मातृभाषा, बोलियों में कर थोड़े दिन में तकनिकी शब्दों को भी हर मातृभाषा में ला सकते है। कुछ परेशानी नहीं है और तो और हमारे पास माँ (संस्कृत) भी है उसका भी उपयोग किया जा

सकता है। संस्कृत के शब्द तो सभी भाषओं में मिल जाते है।

## दोपहर की शादी में थ्री पीस सूट पहनना स्वीकार, भले ही चर्म रोग क्योँ न हो : भारत का सांस्कृतिक पतन

एक बहुत बड़ा विकार हमारी भूषा में आया है। अमेरिका, यूरोप आदि के बहुताधिक भागो में ठंड अधिक पड़ती है कई कई महीने हिमपात होता रहता है इसलिए उनकी भूषा का विकास उसके अनुकूल है चुस्त कपड़े, शरीर से चिपके हुए जो अधिक गर्मी दे, कोट भी ठंड से बचाव हेतु, टाई शीत से गर्दन के बचाव हेतु।

भारत में भूषा का विकास भी, हमारी जलवायु एवं आवश्यक्ता के अनुरूप विकसित हुआ है। धोती, लुंगी लगभग एक ही जैसे वस्त्र होते है मात्र पहनने का ढंग अलग अलग होता है एवं यह ढंग अलग अलग प्रान्तों का उनकी जलवायु के अनुकूल है। बिना सिलाई वाले वस्त्रों को बहुत उत्तम माना गया है सन्यासियों ऋषियों ने भी इसे पवित्र माना है। देश में जहाँ ग्रीष्मकाल में तापमान कहीं कहीं ५० के भी पार हो जाता है। पूरे देश में हिमालय एवं उसके चरणों के पास के राज्य ( जो कि भारत भूखंड के लगभग एक चौथाई से भी कम निकलेगा ) को यदि छोड़ दे तो भारत में औसत तापमान २७ के लगभग होता है।

जो की पसीना निकलने हेतु पर्याप्त है। परंतु पश्चिम अंधानुकरण के पथ पर अग्रसर व्यक्तियों को चिलचिलाती गर्मी में ऐसी " चुस्त जींस " पहनना स्वीकार है जिसके जेब में यदि मुद्रा रखी हो तो चित पट दिख जाए, दोपहर की शादी में " थ्री पीस सूट " पहनना स्वीकार है भले ही चर्म रोग क्योँ न हो जाए आदि। चर्म रोग हो जाने के उपरांत एक से दूसरे वैध तक भागते रहेंगे पर यह नहीं की चुस्त कपड़ो की जगह भारतीय परिधान धोती, कुरता, पजामा आदि पहनना शुरू कर दे।

# भोजन की बात करें तो हम इतने भाग्यशाली है कोई दूसरा देश उसकी कल्पना नहीं कर सकता

भोजन के स्तर पर भी हमने बहुत अधिक अंधानुकरण किया है। भारत का भोजन भी, हमारी जलवायु एवं आवश्यक्ता के अनुरूप विकसित हुआ है। भारत में लाखो सहस्त्र वर्षों में जो विकास हुआ है उसमें सबसे अधिक विकास इसी में हुआ है। पुरे विश्व में लगभग सभी विद्वान इस पर एक मत है की भोजन पर हमने जो विविधता दी है पिछले हजारो, लाखो वर्षों में यह भारत की एक सबसे बड़ी देन है पुरे विश्व को, अनाज का एक प्रकार गेहूं, गेहूं यूँ तो ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका एवं यूरोप के भी कुछ देशों में होता है किंतु भारत में गेहूं का आटा बनाया जाता है उसके उपरांत उससे बीसियों प्रकार की कचौड़ी, बीसियों प्रकार की पूड़ी, बीसियों प्रकार के पराठे, बीसियों प्रकार की रोटियाँ आदि बनाई जाती है।

उसी गेहूं के आटे से यूरोप वाले दो ही भोज्य बना पाते है पाव रोटी, डबल रोटी तीसरी रोटी बना ही नहीं सकते। उन दोनों को भी बनाने की विधि में कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं होता। सैकड़ों प्रकार के गेहूं से सैकड़ों प्रकार के व्यंजन बनाने वाली भारतीय संस्कृति का यह दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है की कुछ लोग दिन की शुरुआत डबल रोटी, पाव रोटी से करते है। विक्रय हेतु अलग अलग नामों से पावरोटी, डबलरोटी प्रस्तुत है। अब उसको बीच में से काट कर सलाद भरलो अथवा सलाद के बीच में उसे रख उसे खा लो बात तो एक ही है। यह डबल रोटी जो हम खाते है नयी (ताज़ी) नहीं होती है। अगर यह नयी (ताज़ी) होती तो बनती ही नहीं वो तो बासी ही होती है। वह एक दिन की, दो दिन की, दस दिन की बांसी हो सकती है। यूरोप, अमेरिका में तो दो-दो तीन-तीन महीने पुरानी पावरोटी, डबलरोटी मिलती है एवं लोग उन्ही को खाके अपना जीवन का यापन करते है।
गेहूं के आटे के बारे में विज्ञान यह कहता है की इस आटे के गीले होने के ३८ मिनिट बाद इसकी रोटी बन जानी चाहिए एवं रोटी बनने के ३८ मिनिट के अंदर इसे खा लिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में डबलरोटी, पावरोटी के बारे में क्या लिखे ? आप स्वयं ज्ञान रखते है।

हम इतने भाग्यशाली है की ऐसे देश में रहते है की कोई दूसरा देश उसकी कल्पना नहीं कर सकता हम सुबह शाम ताज़ी सब्जियां खा सकते है एवं आपके घर तक दरवाजे तक आ कर कोई आपको यह दे जाता है| यह स्वप्न कोई

अमेरिका, यूरोप आदि में रहने वाला देख नहीं सकता, सोच नहीं सकता कल्पना नहीं कर सकता की प्रतिदिन सुबह-शाम कोई व्यक्ति घर तक आ कर उन्हें ताज़ी सब्जी दे जाए, ना केवल दे जाए बल्कि हाल चाल भी पूछे "माँ जी कैसे हो आपकी बिटिया कैसी है ?" भले ही आप सब्जी ले अथवा ना लें। ऐसा आत्मीय रिश्ता कोई वैभागिक गोदाम (डिपार्टमेंटल स्टोर) वाला नहीं जोड़ सकता।

अब दुःख तो इस बात का है की जिस देश में हमे रोज सुबह शाम ताज़े टमाटर मिलते है जिनकी हम सुलभता से चटनी बना सकते है। वहाँ हम महीनों पुराना सॉस खाते है और कोई पूछे तो कहते है "इट्स डिफरेंट" ताज़े टमाटर हम ले तो ०८ से १० रू किलो एवं तीन-तीन महीने पुराना विदेशी सॉस ले १५० से २०० रु किलो जिसमें प्रिज़र्वेटीव मिले हो जो हानिकारक होते है, तो यह है डिफरेंस अर्थात मूर्खता की पराकाष्ठा जो है वह हमने लाँघ ली है।

देश के घरों में चक्की से सुबह ताज़ा आटा, शाम को ताज़ा आटा बनाया जाता रहा है। सुबह के आटे का संध्या में उपयोग नहीं एवं संध्या के आटे का दूसरे दिन उपयोग नही, एक यह भी कारण रहा है की भारत में कभी इतनी अधिक दवाइयों की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। क्यूंकि जब भोजन ही इतना स्वच्छ एवं ताज़ा लिया जाता हो तो शरीर स्वस्थ रहता है।

हमारे घरों में माताएं बहने इतनी कुशल होती है ज्ञानी होती है की जो वस्तु शीघ्रता से खराब होने वाली होती है उसे वह सुरक्षित कर देती है, उनको दीर्घायु दे देती है इसका एक उदाहरण है आचार डालने की परंपरा आपने स्वयं कई कई वर्षों पुराने आचार खाए होंगे। अब अंधानुकरण के चलते घरों में आचार डालना ही बंद हो गए बाज़ार से आचार उठा लाते है जो ६-८ महीने में खराब हो जाता है। हमें लाज आनी चाहिए की सहस्त्रों वर्षों से जिस देश में सैकड़ों प्रकार की सामग्री के साथ सैकड़ों प्रकार के अचार बनाये जाते रहे हो उस देश में कुछ घरों में विदेशी बाज़ार का बनाया हुआ अचार परोसा जा रह है माताओं बहनों को अचार बानाने की विधि तक नहीं आती कौन सी वस्तु किस अनुपात में होना चाहिए उन्हें ज्ञात नहीं इसलिए केमिकल डाले हुए डब्बा बंद अचार उठा लाते है।

# भारत में गीत संगीत का विकास जलवायु एवं वातावरण के अनुसार हुआ : भारत का सांस्कृतिक पतन

भारत में गीत संगीत का विकास भी हुआ है तो जलवायु एवं वातावरण के अनुसार ही हुआ है कितना अद्भुत है मेरा देश ! उदाहरण हम पहाड़ी नृत्य शैली ले एवं मैदानी नृत्य शैली पहाड़ी क्षेत्रों में जैसे मणिपुर, जम्मू आदि के नृत्यो में आप पद्संचालन को धीमा पाएंगे।

इसके विपरीत मैदानी क्षेत्रों जैसे मध्यप्रदेश, पंजाब आदि के नृत्यों जैसे कत्थक आदि में आप पद्संचालन को तेज पाएंगे। इसका कारण पहाड़ी क्षेत्रों में प्राणवायु की कमी होती है एवं तेज पद्संचालन से प्राणवायु के अभाव से शीघ्र शरीर भारी हो जाएगा शिथिल हो जाएगा। जबकि मैदानी क्षेत्रों में ऐसा कोई रोध नहीं है। भारत में ऐसा ही जल वायु के, सभ्यता के, संस्कृति के अनुकूल ऐसा ही विकास गायन एवं वादन का हुआ है। उदाहरण पहाड़ी क्षेत्रों में ताल माध्यम धीमे व्यंजन मैदानी क्षेत्रों में ताल तेज ऊँचे व्यंजन। यह सब सहस्त्रों वर्षों की परंपरा में विकसित हुआ है।

किसी बड़े गायक अथवा नृतक से आप पूछें यह गायन अथवा नृत्य आप क्योँ कर रहे तो बहुतायत में वह कहते है ईश्वर प्राप्ति के लिए। वादकों से भी पूछने पर यही उत्तर मिलता है अर्थात गीत और संगीत भारत में ईश्वर प्राप्ति का अभिन्न अंग है। जिसका हमने नाश कर दिया स्थिति इतनी बुरी बना दी की अगर कोई युवा माइकल जैक्सन को नहीं जनता तो उसे पिछड़ा माना जाता है। जैसे २१ वी सदी का होने के लिए उसे जानना नितांत आवश्यक है ? भारत में जहाँ बालक के पैदा होने पर, विवाह होने पर, फसलों की कटाई करते समय, बुआई करते समय, घर में कटाई लाते समय अर्थात जीवन का हर कार्य संगीत, साथ रहता है यह तो भारत में ही है।

संभवतः इसी हेतु की लोगों को किसी कार्य में उब न लगे, बोझ न लगे, सभी कार्य गीत संगीत के साथ किये जाते है। एक तो लोक पक्ष एक शास्त्रीय पक्ष सैकड़ों किस्म के राग एवं रागनिया बड़े बड़े साधक जिन्हें साधने में वर्षों वर्ष लगा देते है। आप उनसे पूछें तो कहते है अभी अल्प ही सीखा है अभी बहुत शेष है। इतना अपार समुद्र है भारत संगीत की तीनों विधाओ का गीत गायन एवं वादन का।

# पेप्सी से किये गए अनुबंध, तोड़े गए सभी कानून किये झूठे दावे

पेप्सी को कारोबार करने की अनुमति देते समय सरकार के साथ जो अनुबंध हुआ उसकी प्रमुख शर्तें कुछ इस प्रकार थीं।

१- इस परियोजना से पचास हज़ार लोगों के लिए रोज़गार मिलेगा जिसमें से २५००० अतिरिक्त रोज़गार पंजाब में पैदा होंगे।

२- पंजाब की कुल फल सब्जियों की फसल का २५% इस योजना में प्रसंस्करित होगा।

३- यह कम्पनी खाद्य प्रसंस्करण (food processing) में उच्च तकनीक लाएगी और भारतीय उत्पादों के निर्यात में सहायता करेगी।

४- कम्पनी कुल पूंजी का कुल ७४% खाद्य एवं कृषि प्रसंस्करण में मात्र २६% ठन्डे पेय में व्यय करेगी।

५- उत्पाद का ५०% निर्यात किया जायेगा यह अनुबंध दस वर्ष तक लागु रहेगा ठन्डे पेय का साद्र बाहर से आयत नहीं होगा उसे यहीं भारत में बनाया जायेगा।

६- इस परियोजना पर यदि भारत एक डॉलर व्यय करता हैं तो कम्पनी भारत को नो निर्यात के माध्यम से ५ डॉलर कमा कर देगी।

७- विदेशी ब्रांड का नाम नहीं प्रयोग किया जायेगा।

पेप्सी ने पिछले वर्षों में हर प्रकार से सरकार को धत्ता बताई है सारे नियम कानूनों को तोडा है एवं ऊपर लिखे वायदों में से एक भी पूरा नहीं किया है निर्यात की शर्तों की खानापूरी करने के लिए पेप्सी ने खुले बाजार से चावल और चाय खरीद कर अपना उत्पाद बताते हुए उसका निर्यात किया और सरकार को बता दिया कि निर्यात कि शर्त पूरी हुई खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय के सचिव आर. के. रथ ने वाणिज्य मंत्य्राली को पत्र लिख कर सूचित किया "हमारे संज्ञान

में यह बात आई है कि पेप्सी तरह-तरह के दावे कर रहा है यह सभी दावे झूठे हैं"।

अपने निर्यात वायदों के अंतर्गत पेप्सी ने एक भी नए पैसे कि कीमत का निर्यात नहीं किया और पेप्सी ने ठन्डे पेय पर २५% पूंजी लगने कि सीमा का उल्लंघन किया फलों का रस निकालने के लिए मशीनों के आयत करने के नाम पर आयत कर में छूट इस कम्पनी ने प्राप्त करी परन्तु मशीनें फलों का रस निकलने के नहीं बल्कि ठंडा पेय बनाने के लिए मंगवायी गयीं थीं पेप्सी परियोजना कि प्रारंभिक लागत कीमत २२ करोड थी जिसमें हेराफेरी कर इसे ७५ करोड की  बना ली कुछ दिनों लहर पेप्सी का नाटक करके अब यह कम्पनी शुद्ध विदेशी नामों से ही अपने उत्पादों को बेच रही है खाद्य प्रसंस्करण तो इस कम्पनी ने छोड ही दिया है और अकर्मक रूप से ठन्डे पेय का करोबार फैला रही है यह कम्पनी इस समय प्रतिवर्ष ४०० करोड रु विज्ञापन पर खर्च कर रही है।

साभार –  "विदेशी कंपनियों कि जंजीर में जकडा दैनिक जीवन" स्वराज प्रकाशन समूह (इस लेख के सभी तथ्य एवं साक्ष्य लेखक एवं प्रकाशक द्वारा एकत्र किये गए हैं)

# कोक-पेप्सी से कैंसर : बाबा रामदेव के बाद अब अमेरिका ने माना, शोध में साबित हुआ

जहा भारत में एक लंबे समय से योग गुरु बाबा रामदेव कोक, पेप्सी को स्वास्थ्य के लिए खतरा बता रहे है और इसको “टॉयलेट क्लीनर” मानते है, वही अब बाबा रामदेव की तरह ही अमेरिका ने भी अब इसको स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया है और इसके सेवन से कैंसर तक के होने की आशंका जताई है|

अमेरिकी नियामक संस्था सेटर फार साइंस ने गत सप्ताह कहा था कि उसे कोक और पेप्सी के पेय पदार्थो में कैंसर जैसी बीमारी के खतरे वाले रसायन मिथाइलइमिडाजोल यानी कि 4 एमआई की अधिक मात्रा का पता चला है। इसलिए कोक और पेप्सी को अपनी बोतलों पर स्वास्थ्य सबंधी वैधानिक चेतावनी लिखनी चाहिए। इस पर दोनों कंपनियों ने इसके खिलाफ अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन के समक्ष अपील की। जिसपर एफडीए ने कहा कि वह इस मामले की समीक्षा कर रहा है।

अमेरिकी कानून में रंग के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले चार तरह के कैरेमल में अंतर किया गया है। इनमें से दो अमोनिया के साथ बनते हैं और दो अमोनिया के बिना। सीएसपीआई अमोनिया के साथ बनने वाले दो कैरेमल पर बैन चाहती है। सीएसपीआई की बात का पांच बड़े कैंसर एक्सपर्ट समर्थन करते हैं।

इस बीच इन कंपनियों ने उनके पेय उत्पादों के लिए रंगों की आपूर्ति करने वाले सप्लायर्स से कहा है कि वह इन रंगो में मिलाए जाने वाले रसायनों में बदलाव करें। इसमें खासतौर पर 4 एमआई की मात्रा घटाने की बात कही गई है। हालांकि इन कंपनियों ने अपने ग्राहकों को विश्वास दिलाया है कि इस बदलाव से उनके उत्पादों के रंग या फिर स्वाद में किसी तरह का परिवर्तन नहीं होगा।

बाबा रामदेव द्वारा कोक, पेप्सी को टॉयलेट क्लीनर मानने के पीछे तथ्य है कि टॉयलेट क्लीनर और पेप्सी-कोक की Ph वैल्यू एक ही है| Ph एक इकाई होती है जो एसिड की मात्रा बताने का काम करती है और उसे मापने के लिए Ph मीटर होता है |

## शाकाहारी खाना खाने वाले लोगों को बीमारियों से दूर रखता है शाकाहार जीवन

शाकाहारी दिवस के अवसर पर बेनजीर ने कहा कि शाकाहारी खाना खाने वाले लोगों में मांस खाने वाले लोगों की तुलना में मोटापे का खतरा एक चौथाई ही रहता है। वही पेटा प्रवक्ता ने कहा कि भारत में तेजी से बढ़ रहे मधुमेह टाइप 2 से पीडि◌ित लोग शाकाहार अपना कर इस बीमारी पर नियंत्राण पा सकते हैं और अपना मोटापा भी घटा सकते हैं।

शाकाहारी खाने में कोलेस्टाल नहीं होता बहुत कम वसा होती है और यह कैंसर के खतरे को 40 फीसद कम करता है। उन्होंने कहा कि खाने के लिये पशुओं की आपूर्ति में बड़े पैमाने पर जमीन, खाद्यान्न, बिजली और पानी की जरूरत होगी । वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि जलवायु परिवर्तन को रोकने, प्रदूषण को कम करने, जंगलो को काटे जाने से रोकने और दुनियाभर से भुखमरी को खत्म करने के लिये वैश्विक स्तर पर शाकाहारी खाना

खाया जाना जरूरी है।

डाक्टर भुवनेश्वरी गुप्ता ने कहा कि एक स्वास्थ्यवद्र्धक तथा संतुलित शाकाहारी खाने में सभी अनाज, फल, सब्जियां, फलियां, बादाम, सोया दूध और जूस आता है। यह खाना आपकी दिन प्रतिदिन की विटामिन, कैल्शियम, आयरन, फोलिक एसिड, विटामिन सी, प्रोटीन और अन्य जरूरतों को पूरा करता है। गौरतलब है कि उत्तरी अमेरिका शाकाहारी सोसाइटी ने शाकाहारी जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1977 में एक अक्तूबर के दिन को विश्व शाकाहार दिवस के रूप में मनाये जाने की शुरूआत की थी।

## भारत का स्वर्णिम अतीत

# भारतवासियों ने विश्व को कपड़ा पहनना एवं बनाना सिखाया है :

पूर्णतः दोषी आप नहीं है, संपन्नता एवं उन्नति रूपी प्रकाश हेतु हम पूर्व की ओर ताकते है किंतु सूर्य हमारी पीठ की ओर से निकलता है। देशकाल की दृष्टि से कहूँ तो मात्र १९०-२४० वर्ष पूर्व का भारत, दूसरे शब्दों में, मनुष्य की औसत आयु ६० वर्ष भी मान ले तो मात्र ३-४ पीढ़ी पूर्व। दो सौ से भी अधिक विद्वान इतिहासकारों ने, शोधकर्ताओं ने जब "सोने की चिड़िया" (वर्तमान भारतियों में भारत के इतिहास के नाम पर शेष) पर शोध कर जो शोधपत्र, पुस्तके आदि लिखी उसके कुछ अंश आपसे साझा कर रहा हूँ।

जिनमें से एक थे, थोमस बेबिगटन मैकोले (टी.बी.मैकोले) जो १८३४ में आये एवं १८५१ लगभग १७ वर्ष तक भारत में रहे। जिस कुव्यवस्था के कारण हमे अपने ही देश का अतीत आपको विदेशी विद्वानों के प्रमाणों आदि से बताना पड़ रहा है, उसमें इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। इन्हें अभी विराम देते है, लोगो में धारणा बनी रहती है की अंग्रेजो के पहले का भारत मात्र कृषि प्रधान देश था जो की पूर्णतः असत्य है। अंग्रेजी इतिहासकार विलियम डिग्वी जिनके बारे में प्रचलित है की वे बिना किसी प्रमाण के कुछ बोलते नहीं, लिखते नहीं उन्होंने १७ वी शताब्दी में भारत को "सर्वश्रेष्ठ" व्यापारिक, कृषि एवं औद्योगिक देश लिखा है। भारत की भूमि को सबसे उपजाऊ, व्यापारियों को सबसे निपुण एवं भारतीय शिल्पकारों एवं दस्तकारो द्वारा निर्मित किसी भी उत्पाद का केवल स्वर्ण के ही बदले विक्रय होने की बात लिखता है। आगे इनकी लेखनी से यह निश्चित हो जाता है की भारत निर्यात प्रधान देश था।

फ्रांसिसी इतिहासकार फ्रांस्वा पेराड ने सन १७११ में भारत पर लिखे ग्रन्थ में सैकड़ों प्रमाण दिए है, वे लिखते है " मेरी जानकारी में भारत देश में ३६ प्रकार के ऐसे उद्योग चलते है जिनमें उत्पादित प्रत्येक वस्तु विदेशो में निर्यात होती है", "भारत के उत्पाद सबसे उत्कृष्ट एवं सबसे सस्ते होते है", "मुझे मिले प्रमाण के अनुसार है भारत का निर्यात ३००० वर्षों (अर्थात बुद्ध से ५०० वर्ष एवं महावीर जी से लगभग ६५० वर्ष पूर्व) से निर्बाधित रूप चलता आ रहा है"। स्कॉटिश इतिहासकार मार्टिन लिखते है "जब ब्रिटेन एवं इंग्लैण्ड के निवासी बर्बर एवं जंगली जानवरों की तरह जीवन जीते थे तब भारत में सर्वोच्च कोटि का वस्त्र बनता था एवं विश्व के देशों में विक्रय होता था"। आगे लिखते है की "मुझे यह स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं है की भारतवासियों ने विश्व को कपड़ा पहनना एवं बनाना सिखाया है" इसके साथ वह यह भी जोड़ते है की "रोमन साम्राज्य में जितने भी राजा रानी हुए है उन सभी ने भारत में ही निर्मित कपड़े पहने है, आयात किये है"|

विलियम वार्ड ने एवं फ्रांस के टेवर्नियर ने भी भारत के वस्त्र उद्योग के बारे में बहुत से प्रमाण दिए है। सन १८१३ में अंग्रेजो की संसद में बहस के समय कई अंग्रेजी सांसदों ने कई प्रमाणों एवं सर्वेक्षणों के आधार पर विवरण दिया, सारे विश्व का लगभग ४३% उत्पादन अकेले भारत में होता है,यही बात उन्होंने १८३५ में एवं १८४० तक उद्धरण (quote) की। ऐसे ही सारे विश्व के निर्यात में भी भारत का भाग लगभग ३३% था इसे भी संसद में १८४० तक तक उद्धरण किया गया। इसी क्रम में एक अकड़ा सकल जगत की कुल आमंदनी का अंग्रेजो ने उद्धरण किया जिसमें से लगभग २७% भाग हमारा था।

जी.डब्ल्यू.लिटनेर, थोमस मुनरो, पैनडर्कास्ट्, कैम्पवेल आदि अधिकारीयों ने भी भारत की तकनीकी एवं शिक्षा व्यवस्था पर बहुत कार्य किया।

कैम्पवेल लिखते है "जिस देश का उत्पादन सबसे अधिक होता है यह तभी संभव है जब वहाँ कारखाने हो, कारखाने तभी संभव है जब तकनिकी हो, तकनीकी तभी संभव है जब विज्ञान हो एवं जब विज्ञान मूल रूप से शोध के लिए प्रस्तुत हो तब उसमें से तकनीकी का निर्माण होता है"।

शोध → विज्ञान { मूल विज्ञान (फंडामेंटल) > प्रयोगिक विज्ञान (एप्लाइड) } → तकनीकी → कारखाने → उत्पाद

# भारत में ७ लाख ३२ हज़ार गुरुकुल एवं विज्ञान की २० से अधिक शाखाएं थीं

अब बात आती है की भारत में विज्ञान पर इतना शोध किस प्रकार होता था, तो इसके मूल में है भारतीयों की जिज्ञासा एवं तार्किक क्षमता, जो अतिप्राचीन उत्कृष्ट शिक्षा तंत्र एवं अध्यात्मिक मूल्यों की देन है। "गुरुकुल" के बारे में बहुत से लोगों को यह भ्रम है की वहाँ केवल संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी जो की गलत है। भारत में विज्ञान की २० से अधिक शाखाएं रही है जो की बहुत पुष्पित पल्लवित रही है जिसमें प्रमुख **१. खगोल शास्त्र २. नक्षत्र शास्त्र ३. बर्फ़ बनाने का विज्ञान ४. धातु शास्त्र ५. रसायन शास्त्र ६. स्थापत्य शास्त्र ७. वनस्पति विज्ञान ८. नौका शास्त्र ९. यंत्र विज्ञान** आदि इसके अतिरिक्त शौर्य (युद्ध) शिक्षा आदि कलाएँ भी प्रचुरता में रही है। संस्कृत भाषा मुख्यतः माध्यम के रूप में, उपनिषद एवं वेद छात्रों में उच्चचरित्र एवं संस्कार निर्माण हेतु पढ़ाए जाते थे।

थोमस मुनरो सन १८१३ के आसपास मद्रास प्रांत के राज्यपाल थे, उन्होंने अपने कार्य विवरण में लिखा है मद्रास प्रांत (अर्थात आज का पूर्ण आंद्रप्रदेश, पूर्ण तमिलनाडु, पूर्ण केरल एवं कर्णाटक का कुछ भाग ) में ४०० लोगो पर न्यूनतम एक गुरुकुल है। उत्तर भारत (अर्थात आज का पूर्ण पाकिस्तान, पूर्ण पंजाब, पूर्ण हरियाणा, पूर्ण जम्मू कश्मीर, पूर्ण हिमाचल प्रदेश, पूर्ण उत्तर प्रदेश, पूर्ण उत्तराखंड) के सर्वेक्षण के आधार पर जी.डब्लू.लिटनेर ने सन १८२२ में लिखा है, उत्तर भारत में २०० लोगो पर न्यूनतम एक गुरुकुल है। माना जाता है की मैक्स मूलर ने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर सबसे अधिक शोध किया है, वे लिखते है "भारत के बंगाल प्रांत (अर्थात आज का पूर्ण बिहार, आधा उड़ीसा, पूर्ण पश्चिम बंगाल, आसाम एवं उसके ऊपर के सात प्रदेश) में ८० सहस्त्र (हज़ार) से अधिक गुरुकुल है जो की कई सहस्त्र वर्षों से निर्बाधित रूप से चल रहे है"।

उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के आकडों के कुल पर औसत निकलने से यह ज्ञात होता है की भारत में १८ वी शताब्दी तक **३०० व्यक्तियों पर न्यूनतम एक गुरुकुल था**। एक और चौकानें वाला तथ्य यह है की १८ शताब्दी में भारत की जनसंख्या लगभग २० करोड़ थी, ३०० व्यक्तियों पर न्यूनतम एक गुरुकुल के अनुसार भारत में **७ लाख ३२ सहस्त्र गुरुकुल** होने चाहिए। अब रोचक बात यह भी है की अंग्रेज प्रत्येक दस वर्ष में भारत में भारत का सर्वेक्षण करवाते थे उसे के अनुसार १८२२ के लगभग भारत में कुल **गांवों की संख्या भी लगभग ७ लाख ३२ सहस्त्र थी**, अर्थात प्रत्येक गाँव में एक गुरुकुल। १६ से १७ वर्ष भारत में प्रवास करने वाले शिक्षाशास्त्री लुडलो ने भी

१८ वी शताब्दी में यहीं लिखा की "भारत में एक भी गाँव ऐसा नहीं जिसमें गुरुकुल नहीं एवं एक भी बालक ऐसा नहीं जो गुरुकुल जाता नहीं"।

राजा की सहायता के अपितु, समाज से पोषित इन्ही गुरुकुलों के कारण १८ शताब्दी तक भारत में साक्षरता ९७% थी, **बालक के ५ वर्ष, ५ माह, ५ दिवस के होते ही उसका गुरुकुल में प्रवेश हो जाता था।** प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक विद्यार्जन का क्रम १४ वर्ष तक चलता था। जब बालक सभी वर्गों के बालको के साथ निशुल्कः २० से अधिक विषयों का अध्यन कर गुरुकुल से निकलता था। तब आत्मनिर्भर, देश एवं समाज सेवा हेतु सक्षम हो जाता था।

इसके उपरांत विशेषज्ञता (पांडित्य) प्राप्त करने हेतु भारत में विभिन्न विषयों वाले जैसे शल्य चिकित्सा, आयुर्वेद, धातु कर्म आदि के विश्वविद्यालय थे, नालंदा एवं तक्षशिला तो २००० वर्ष पूर्व के है परंतु मात्र १५०-१७० वर्ष पूर्व भी भारत में ५००-५२५ के लगभग विश्वविद्यालय थे। थोमस बेबिगटन मैकोले (टी.बी.मैकोले) जिन्हें पहले हमने विराम दिया था जब सन १८३४ आये तो कई वर्षों भारत में यात्राएँ एवं सर्वेक्षण करने के उपरांत समझ गए की अंग्रेजो पहले के आक्रांताओ अर्थात यवनों, मुगलों आदि भारत के **राजाओं, संपदाओं एवं धर्म का नाश** करने की जो भूल की है, उससे पुण्यभूमि भारत कदापि पददलित नहीं किया जा सकेगा, अपितु **संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता का नाश** करे तो इन्हें पराधीन करने का हेतु सिद्ध हो सकता है। इसी कारण "**इंडियन एज्यूकेशन एक्ट**" बना कर समस्त गुरुकुल बंद करवाए गए। हमारे शासन एवं शिक्षा तंत्र को इसी लक्ष्य से निर्मित किया गया ताकि नकारात्मक विचार, हीनता की भावना, जो विदेशी है वह अच्छा, बिना तर्क किये रटने के बीज आदि बचपन से ही बाल मन में घर कर ले और अंग्रेजो को प्रतिव्यक्ति संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता का नाश का परिश्रम न करना पड़े।

उस पर से अंग्रेजी कदाचित शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होती तो इस कुचक्र के पहले अंकुर माता पिता ही पल्लवित होने से रोक लेते परंतु ऐसा हो न सका। हमारे निर्यात कारखाने एवं उत्पाद की कमर तोड़ने हेतु भारत में स्वदेशी वस्तुओं पर अधिकतम कर देना पड़ता था एवं अंग्रेजी वस्तुओं को कर मुक्त कर दिया गया था। कृषकों पर तो ९०% कर लगा कर फसल भी लूट लेते थे एवं "**लैंड एक्विजिशन एक्ट**" के माध्यम से  सहस्त्रो एकड़ भूमि भी उनसे छीन ली जाती थी, अंग्रेजो ने कृषकों के कार्यों में सहायक गौ माता एवं भैसों आदि को काटने हेतु पहली बार कलकत्ता में कसाईघर चालू कर दिया, लाज की बात है वह अभी भी चल रहा है। सत्ता हस्तांतरण के दिवस (१५-८-१९४७ ) के उपरांत तो इस कुचक्र की गोरे अंग्रेजो पर निर्भरता भी समाप्त हो गई, अब तो इसे निर्बाधित रूप से चलने देने के लिए बिना रीढ़ के काले अंग्रेज भी पर्याप्त थे, जिनमें साहस ही नहीं है भारत को उसके पूर्व स्थान पर पहुँचाने का |

**"दुर्भाग्य है की भारत में हम अपने श्रेष्ठतम सृजनात्मक पुरुषों को भूल चुके है। इसका कारण विदेशियत का प्रभाव और अपने बारे में हीनता बोध की मानसिक ग्रंथि से देश के बुद्धिमान लोग ग्रस्त है" – डॉ.कलाम, "भारत २०२० : सहस्त्राब्दी"**

आप सोच रहे होंगे उस समय अमेरिका यूरोप की क्या स्थिति थी, तो सामान्य बच्चों के लिए सार्वजानिक विद्यालयों की शुरुआत सबसे पहले इंग्लैण्ड में सन १८६८ में हुई थी, उसके बाद बाकी यूरोप अमेरिका में अर्थात जब भारत में प्रत्येक गाँव में एक गुरुकुल था, ९७ % साक्षरता थी तब इंग्लैंड के बच्चों को पढ़ने का अवसर मिला। तो क्या पहले

वहाँ विद्यालय नहीं होते थे? होते थे परंतु महलों के भीतर, वहाँ ऐसी मान्यता थी की शिक्षा केवल राजकीय व्यक्तियों को ही देनी चाहिए बाकी सब को तो सेवा करनी है।